श्री

कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ।।

❖ बड़ा कयामतनामा ❖

खास उमत सों कहियो जाई, उठो मोमिनों कयामत[1] आई ।
केहेती हों माफक कुरान, तुमारे आगे करों बयान ॥१॥

जो कोई खास उमत सिरदार, खड़े रहो होए हुसियार ।
वसीयत नामे देवे साख, अग्यारैं सदीं होसी बेबाक[2] ॥२॥

बरकत दुनियाँ और कुरान, और फकीरों की मेहेरबान ।
ए दरगाह से आया बयान, जबराईल ले जासी अपने मकान ॥३॥

और तिन दिन होसी अंधाधुंध, द्वार तोबा के होसी बंध ।
कह्या होसी और रवेस[3], तब कोई किसी का नाहीं खेस[4] ॥४॥

अब कहो जी बाकी क्या रह्या, निसान कयामत का जाहेर कह्या ।
पातसाही ईसा बरस चालीस, लिख्या सिपारे अठाईस ॥५॥

१. महाप्रलय का दिन । २. चुकता हिसाब । ३. रिती-रिवाज । ४. सगे संबंधी ।

क्या हिंदू क्या मुसलमान, सब एक ठौर ल्यावें ईमान ।
सो क्या होसी उठे कुरान, ए विचार देखो दिल आन ।।६।।

नव सै नब्बे हुए वितीत, तब हजरत ईसा आए इत ।
सो लिख्या अग्यारहें सिपारे मांहें, मैं खिलाफ बात कहोंगी नाहें ।।७।।

रूहअल्ला पेहेनें जामें दोए, ए लिख्या कुरान में सोई होए ।
ए लिख्या छठे सिपारे मांहें, धोखे वाला जाए देखे तांहें ।।८।।

ए जो बरस ईसा की कही, तिन की तफसीर कर देऊं सही ।
दस अग्यारहीं बारहीं के तीस, ईसा पातसाही बरस चालीस ।।९।।

सत्तर बरस और जो रहे, सो तो पुल-सरात के कहे ।
मोमिन चलें बिजली की न्यात, मुतकी[1] भी घोड़े की भांत ॥१०॥

और जो जाहेरी उमत रही, दस बिध तिनको दोजख कही ।
पुल-सरात कही खाँडे[2] की धार, गिरे कटे नहीं पावे पार ॥११॥

अमेतसालून में कह्या ए, ए जाए देखो दीदे दिल के ।
ए जाहेर कह्या बयान, पर दिल के अंधे न सके पेहेचान ॥१२॥

दसहीं ईसा अग्यारहीं इमाम, बारहीं सदी फजर तमाम ।
ए लिखी बीच सिपारे आम, तीसमा सिपारा जाको नाम ॥१३॥

आए ईसा महंमद और इमाम, सब कोई आए करो सलाम ।
पर न देखो आंखों जाहेरी, दिल दीदे देखो चित्त धरी ॥१४॥

अजाजीलें देख्या वजूद, तो आदम को न किया सजूद ।
सिजदे किए तिनें बेहद, सो सारे ही हुए रद ॥१५॥

जो उनने देख्या आकार, तो लगी लानत और हुआ खुआर[3] ।
तब अजाजीलें मांग्या वचन, के आदम मेरा हुआ दुस्मन ॥१६॥

इनकी औलाद की मारों राह, सबके दिल पर होऊं पातसाह ।
आदम अजाजीलसों ऐसी भई, आठमें सिपारें में जाहेर कही ॥१७॥

१. ईश्वर सृष्टि । २. तलवार । ३. दुर्दशा ।

फेर तुम लेत वाही की अकल, पर क्या करो तुम जो वाही की नसल ।
तुम दज्जाल बाहेर ढूंढ़त, वह दिल पर बैठा ले लानत ॥१८॥

ऊपर माएने न होए पेहेचान, ए तुम सुनियो दिल के कान ।
हमेसां आवत है ज्यों, अब भी फेर आए हैं त्यों ॥१९॥

सब पैगंमर जहूद खिलके[१], विचार देखो दीदे दिल के ।
ओ तो आए हिंदुओं दरम्यान, जिनको तुम केहेते कुफरान ॥२०॥

तुम ढूंढ़ो अपने खिलके मांहें, तामें तो साहेब आया नाहें ।
जिनको तुम केहेते काफर जात, सो सबकी करसी सिफात[२] ॥२१॥

रब ना रखे किसी का गुमान, ओ तो गरीबों पर मेहेरबान ।
परदा लिख्या जो हजरत के रूए[३] पर, तिन की क्या तुमको नहीं खबर ॥२२॥

परदा लिख्या वास्ते आवने हिंदुओं मांहें, ए पढ़े इसारत समझत नाहें ।
जो देखत हैं जेर जबर, सो हकीकत पावें क्यों कर ॥२३॥

ऐसी हिंदुओं की कही सिफत, आखिर हिंदुओं में मुलक नबुवत ।
और आप हजरत[४] रिसालत-पनाह[५], जहूद फकीरों में पातसाह ॥२४॥

पांचमें सिपारे में एह बयान, न मानो सो जाए देखो कुरान ।
और हिंदवी किताबों में यों कही, बुध कलंकी आवेगा सही ॥२५॥

सो आएके करसी एक रस, मसरक[६] मगरब[७] होसी बस ।
कोई केहेसी क्या दोऊ होसी एक बेर, तिनका भी कर देऊं निबेर[८] ॥२६॥

ए इसारत खोले निज बुध, बिना हादी ना पाइए सुध ।
घोड़े को लिख्या कलंकी कर, ताकी किन को नहीं खबर ॥२७॥

जोतिष कहे विजिया अभिनंद, सब कलिजुग को करसी निकंद[९] ।
अंजील कहे ईसा बुजरक, सो आए के करसी हक ॥२८॥

जहूद कहें मूसा बड़ा होए, ताके हाथ छूटें सब कोए ।
यों सारों ने रसम जुदी कर लई, सब बुजरकी धनी की कही ॥२९॥

१. जाति । २. सिफारिश करना । ३. चेहरा । ४. रसूल पैगंमर । ५. रक्षक । ६. पूर्व (हिंदू) । ७. पश्चिम (मुस्लिम) । ८. निर्णय । ९. नष्ट ।

ओ उरझे जुदे नाम धर, रब आलम का आया आखिर ।
अपनी अपनी में समझे सब, जुदा न रह्या कोई अब ॥३०॥
सब किताबों दई साख, जुदे नाम जुदी लिखी भाख ।
सत असत दोऊ जुदे किए, माया ब्रह्म चिन्हाए के दिए ॥३१॥
दोनों जहान में थी उरझन, करमकांड सरीयत चलन ।
करी हकीकत मारफत रोसन, साफ किए आसमान धरन ॥३२॥
ब्रह्मांड को भान्यो खिलाफ, सब जहान को कियो मिलाप ।
ग्वाही खुदा की खुदा देवे, करे बयान हुकम सिर लेवे ॥३३॥
सब पूजसी साहेब सरत, कलाम अल्ला यों केहेवत ।
ए लिख्या तीसरे सिपारे, खोले अर्स अजीम के द्वारे ॥३४॥
लैलत-कदर के तीन तकरार, तीसरे फजर में कार गुजार ।
रूहों फरिस्तों वजूद धरे, लैलत कदर के मांहें उतरे ॥३५॥
खैर उतरी महीने हजार, गिरो दोऊ भई सिरदार ।
हुकम दिया साहेबें इनके हाथ, भई सलामती इनके साथ ॥३६॥
यों केतिक ग्वाही देऊं कुरान, इन्ना इन्जुलना में एह बयान ।
तीसरे तकरार की भई फजर, अग्यारैं सदी में देखो नजर ॥३७॥
और पेहेले सिपारेमें जो लिखी, सो तुम क्या नहीं देखी ।
साहेदी कुंन की देवे जोए, खास उमत का कहिए सोए ॥३८॥
अब जो कोई होवे खास उमत, देवे ग्वाही सो होए साबित ।
उड़ाए गफलत हो सावधान, छोड़ो पढ़ों का गुमान ॥३९॥
हकुल्यकीन[1] और सुंनी[2] जोए, पेहेले ईमान ल्यावेगा सोए ।
पीछे जाहेर होसी साहेब, तब तो ईमान ल्यावेंगे सब ॥४०॥
भिस्त दोजख जाहेर भई, नफा किसी को न देवे कोई ।
ले हिरदे हादी के पाए, छत्रसाल यों कहे बजाए ॥४१॥

॥प्रकरण॥१॥चौपाई॥४१॥

१. अटल विश्वास । २. सुनकर विश्वास लाने वाला ।

एक तो कहे अल्ला कलाम, जाहेरी माएनों का नाहीं काम ।
दूजे तो इसारत कही, इत हुज्जत काहू की ना रही ।।१।।
तीसरे जंजीरों करी जिकर, पोहोंचे न चौदे तबकों की फिकर ।
सोए परोवनी मोतियों मांहें, खुदा बिन दावा किनका नाहें ।।२।।
केहेलावें काजी पढ़े कुरान, अल्ला रसूल ना उमत पेहेचान ।
ना कुरान ना आप चिन्हार, अहेल किताब यों कहावें दीनदार ।।३।।
जाहेरी माएने लिए अंधेर, जाको लानत लिखी बेर बेर ।
ढांपे कुरान की रोसनाई, अंदर सैतानें एही सिखाई ।।४।।
दिल पर दुस्मन हुआ पातसाह, मारी दीन इसलाम की राह ।
हुए हिरस हवा के बंदे, किए सैताने देखीते अंधे ।।५।।
सब अंगों बैठा दुस्मन जोर, दिल के दीदे[1] दिए फोर ।
दुस्मनें ना छोड़्या कोई ठौर, चौदे तबकों इनकी दौर ।।६।।
उबरीं एक रूहें उमत, दूजी गिरो फरिस्तों की इत ।
जिनमें इमाम हुआ आखिरी, हिंदू फकीरों में पातसाही करी ।।७।।
देखाई राह तौरेत कुरान, कुफर सबों का दिया भान ।
ल्याया नहीं जो आकीन, सो जल दोजख आए मिने दीन ।।८।।
जो थी चौदे तबकों अंधेर, भान्यो सैतानी उल्टो फेर ।
कराया सबों को सिजदा, जाहेर किया जो साहेब है सदा ।।९।।
खास गिरो नूरजमाल में लई, नूरजलाल ठौर दूजी को दई ।
तीसरी जो सब दुनियां कही, करी नूर नजर तले सही ॥१०॥
भिस्तां बांट दइयां इन बिध, काम सबों के किए यों सिध ।
कहे छत्ता जो पेहेले ल्यावे ईमान, खास उमत का सोई जान ॥११॥

।।प्रकरण।।२।।चौपाई।।५२।।

१. आंखें ।

लिख्या चौथे सिपारे, सुख उमत को खुदा के सारे ।
कहे मक्के के काफर, आराम करते बीच घर ।।१।।

जो पूजें मक्के के पत्थर, इनों एही जान्या सांच कर ।
और जिनको खुदाए की पेहेचान, सहें दुख न छोड़ें ईमान ।।२।।

तिन की तसल्ली के कारण, महंमद को हुआ इजन ।
और इसलाम कहे दरवेस[१], कही खास उमत इन भेस ।।३।।

याकी मुराद कही इसलाम, यों कह्या मांहें अल्ला कलाम ।
कोई कर ना सके भेव[२], जो महंमद को देवें फरेब ।।४।।

बीच आवें जाएँ सौदागर, वास्ते फानी फल कुफर ।
काफर होए सिताबी दूर, मोमिन साहेब के हजूर ।।५।।

सो काफर पड़े मांहें दोजख, आखिर को जो ल्यावे सक ।
जो मोमिन हैं खबरदार, डरते रहें परवरदिगार ।।६।।

बीच आखिरत के बुजरकी, हुई है इस उमत की ।
सांची गिरो जो है हक, तहां बाग भिस्त बुजरक ।।७।।

दूध सहत[३] की नदियां चलें, बागों बीच दरखतों तले ।
है इसलाम को मेहेमानी, होसी खुदा की मेहेरबानी ।।८।।

जहां बिध बिध की हैं न्यामत, मेवा मिठाइयां बीच भिस्त ।
करके तमासा नूर, इसलाम साहेब के हजूर ।।९।।

जो हमेसां दरगाह के, ए बीच भिस्त खुदाए के ।
और जाहेद[४] जो चाहें भिस्त, आसिकों दीदार की कस्त ॥१०॥

जो कहे हैं नेकोंकार, पाया छिपा भला दीदार ।
जो फुरमान के बरदार, सोई नेक गिरो सिरदार ॥११॥

ए जो कही किताबें तीन, तिन पर है हक का आकीन ।
सिफत जमाने पैगंमर, रखना बीच खुदाए का डर ॥१२॥

१. पुनीत आत्मा । २. भेद, रहस्य । ३. शहद । ४. संयमी ।

अंजील तौरेत और कुरान, इन पर होए आया फुरमान ।
जो हवसेका[1] पातसाह, पाई इन किताबों से राह ॥१३॥

इनकी जो करे उमेद, मुराद इसलाम पावे भेद ।
जो कहे दोस्त साहेब मोहोल, नजीक खुदाए के खासे फैल ॥१४॥

सब्द न छोड़े ए महंमद, वास्ते फानी दुनियां रद ।
वास्ते नेकी आखिरत, कबूं न छोड़ें खास उमत ॥१५॥

अदा हुए सब फरज, तब सिर से छूट्या करज ।
खुसालियां इनों होसी घनी, भिस्त खजाना पाया अपनी ॥१६॥

इनों का होसी सिताब, नजीक खुदाए के हिसाब ।
सब बंदगी एही मोमिन, जो अंदर के मारे दुस्मन ॥१७॥

एही कही तुम हकीकत, ए कबूल करो हुकम सरीयत ।
आप रखो पांउं उस्तुवार[2], मैदान लड़ाई हो हुसियार ॥१८॥

ए जो बैठा मांहें सबन, एही खुदाए का है दुस्मन ।
काफर करे बोहोतक सोर, तो मोमिनों सों न चले जोर ॥१९॥

बाजे नजीक अर्ज़ निमाज, और डरें नहीं हुकम आवाज ।
निमाज पीछे कह्या यों कर, खुदाए का तुम राखो डर ॥२०॥

फुरमान बरदारी[3] ल्यावे जोए, सिताब छुटकारा पावे सोए ।
जिनों कुरान की पाई खबर, तिनों कह्या यों दिल धर ॥२१॥

नफसों से करो सबर[4], मारे हिरस हवा परहेज कर ।
दिल से दृढ़ करो सबर, साबित बंदगी मौला पर ॥२२॥

बंदगी वाले खुदाए राखत, बलाए सेती सलामत ।
कजाए का सिर लेओ हुकम, हक मिलावे को रूह तुम ॥२३॥

दूर करो जो बिना हक, करो उस्तुवारी जो बुजरक ।
लुत्फ[5] मेहेरबानगी पाओ भेद, छूटो तिनसे जो है निखेद[6] ॥२४॥

१. प्रमोधपुरी (जेल) । २. मजबूत । ३. आज्ञाकारी । ४. संतोष । ५. आनंद । ६. निषिद्ध एवं त्याज्य वस्तुएँ ।

खुदाए बीच वजूद हिजाब, रूह तुमारी बैठा दाब ।
पीछे फना के फायदा सब, दौलत खुदाए बका पाओ जब ॥२५॥

बका चाहे सो फना होए, बिना फना बका न पावे कोए ।
छोड़ो नाचीज जो कमतर, ताथें फना होउ बका पर ॥२६॥

ढांपे थे जो एते दिन, हनोज[1] लों न खोले किन ।
बातून जो कुरान के स्वाल, सो जाहेर किए छत्रसाल ॥२७॥

॥प्रकरण॥३॥चौपाई॥७९॥

तीसरे सिपारे बड़ा जहूर, इमाम सुलतान का मजकूर ।
महमूद गजनवी सुलतान, मिले इमाम सुख हुआ जहान ॥१॥

लागन[2] हिंदू मुसलमान, गजनवी महमूद सुलतान ।
ढ़ाए हिंदुओं के खाने बुत, दिल में इमाम की ज्यारत[3] ॥२॥

अपने जमाने था उस्तुवार, कुतब औलियों का सिरदार ।
बंदगी मांहें था बड़ा, सफ तलेकी रेहेता खड़ा ॥३॥

तलब द्वा फातियाओं की कर, चाहता था तो अजमंतिसा अवसर ।
फकीर सुलतानसों बातें भई, तब आकीन आया सही ॥४॥

इमामें कह्या यों कर, पेसकसी[4] ल्यावें हम घर ।
बस्ती कोस पांच हजार, मुलक मदीने कई सेहेर बाजार ॥५॥

एक हजार सात से हाथी, लाख घोड़े सूरमें साथी ।
एती आए के पेसकसी करी, ओढ़ के पुरानी कमरी ॥६॥

आप होए के नंगे पाए, तले की सफ में खड़ा आए ।
आजिज होए नमाया सीस, कहे मोको करो बकसीस ॥७॥

कहे मोको सबूरी देओ, फकीरों के मिलावे में लेओ ।
दुनियां थें आजाद किया, फकीरों के मिलावे में लिया ॥८॥

१. अभीतक । २. युद्ध । ३. दरसन । ४. नजराना ।

तो अजमंतिसा[1] में सही, गजनवी[2] को बकसीस भई ।
इमाम पेहेचान करो रोसन, संसे भान देऊं सबन ॥९॥

देऊं कुरान की साहेद, बिना फुरमान न काढ़ों सब्द ।
छठे सिपारे में एह सनंध, ईसा नुसखे का खावंद ॥१०॥

और साहेदी देऊं तीसरी, अहेल किताबें दिल में धरी ।
दस और एक सिपारा जित, एह सब्द लिखे हैं तित ॥११॥

बरस नव सै नब्बे हुए जब, मोमिन गाजी आए तब ।
रूहअल्ला आए तिन मिसल, दूसरा जामा होसी मिल ॥१२॥

बंदगी ए करसी कबूल, एक की हजार देवें इन सूल[3] ।
ए दूजा जामा ईसे का होए, बातून माएने पाइए सोए ॥१३॥

चौथी साहेदी नामें नूर, हुआ रूहअल्ला का नुसखा जहूर ।
नव सै नब्बे नव मास ऊपर, ए नुसखा लिया मिसल मातबर[4] ॥१४॥

असराफील इत बीच इमाम, ए नुसखे इलम की किताबें कलाम ।
एक रोज आए खाने किताब, कह्या पोहोंचाओ नुसखा सिताब ॥१५॥

महमूद गजनवी सुलतान, ओ नुसखा हासिल करे परवान ।
जब नुसखा उनने सही किया, पंद्रा रोज सामें आएके लिया ॥१६॥

तब अव्वल आखिर की मिली सब जहान, मिले तित हिंदू मुसलमान ।
और भी मिली अनेक जात, सब कोई नुसखा करे विख्यात ॥१७॥

केतोंक अपना किया कुरबान, करें निछावर बुजरक जान ।
इत पांच सै जुलजुलाटहू[5], संग रसूल के असलू रूह ॥१८॥

ए बखत हुआ कही कयामत, दोस्त खाना दाना पोहोंची सरत ।
गुनाह सुलतान के किए सब माफ, लिया नुसखा हुआ साफ ॥१९॥

बारे हलके थे जो बंध, किए आजाद छूटे माया फंद ।
लाख नंगों के दिए सिरो पाए, हुआ सुख दुख सबों जाए ॥२०॥

१. एक आयत । २. गजनां का रहने वाला । ३. तरह । ४. विश्वसनीय (शिरोमणी) । ५. ब्रह्म आत्माऐं ।

पचास हजार बाग किए खैरात, बरकत नुसखे भई सिफात ।
हवेलियां जो थी वैरान, सो किया खड़ियां हुए मेहरबान ॥२१॥
ए जो बात कुराने कही, सो मैं जाहेर करी सही ।
इनका बयान करे आलम, बिना फुरमाया करे जालम ॥२२॥
तुम माएने ऊपर के यों लिए, किस्से कुरान के पेहेले हो गए ।
जो जमाने हुए मनसूख, ए रोसनी तित क्यों डारो चूक ॥२३॥
ए जो इमाम गजनवी का मजकूर, लिख्या आखिरत को होसी जहूर ।
सो मजकूर कहें हो गया, जो जाहेर कयामत में कह्या ॥२४॥
उमी आप पढ़ें कुरान, सुनो जाहेरियों दिल के कान ।
काजी कजा पर आया आखिर, खोल दिल दीदे देखो नजर ॥२५॥
ल्याओ आकीन कहे छत्रसाल, असलू पाक हुए निहाल ॥२६॥

॥प्रकरण॥४॥चौपाई॥१०५॥

लिख्या मांहें नामें नूर, जाए देखो महंमद का जहूर ।
आरिफ कहावें मुसलमान, पावें नहीं हिरदा कुरान ॥१॥
महंमद मुरग कह्या आसमान, ए नीके कर देऊं पेहेचान ।
इन मुरग ने किया गुसल, धोए पर अरक निरमल ॥२॥
तिन मुरगें झटके अपने पर, ता बूंदोंके भए पैगंमर ।
एक लाख भए बीस हजार, जिनों पैगाम दिए सिरदार ॥३॥
कलाम अल्ला की तो एह नकल, देखो दुनियां की अकल ।
महंमद को करहीं औरों समान, इन दुनियां की ए पेहेचान ॥४॥
जो कहावें महंमद के बंदे, सो भी न चीन्हें हिरदे के अंधे ।
कहावें जाहेरी मुसलमान, गिनें महंमद को औरों समान ॥५॥
ऊपर माएने ले भूले जाहेरी, कलाम अल्ला की सुध न परी ।
पेहेले कही जो तुम दिल में आनी, तुम जो जानी मुसलमानी ॥६॥

पाले अरकान मसले बावन, तुम वाही को जानो मोमिन ।
उजू निमाज रोजा फरज, ए तो इन पर धर्‌या करज ।।७।।
और भी इनों मुसलमानी करी, सो भी देखो चलन जाहेरी ।
ए लानत लिखी मांहें फुरमान, सो बड़ी कर पकड़ी मुसलमान ।।८।।
सरीयत यों कहे इभराम, जिनों किए हैं बद फैल काम ।
जिनों अंगों लोप्या फुरमान, सो सारे किए नुकसान ।।९।।
इबराहीम सिर ए लानत कही, सो पढ़ों सुंनत बड़ी कर लई ।
जिन दई लानत[१] ऊपर तकसीर[२], सो सोभा लई मुल्लां मीर पीर ।।१०।।
ए पावें नहीं अल्ला कहानी, इन याही में कर लई मुसलमानी ।
लानत करी ऊपर की बानी, इनों सोई भली कर मानी ।।११।।
पढ़े आलम आरिफ कहावें, पर एक हरफ को अर्थ न पावें ।
मुखथें कहें किताबें चार, पर हिरदे अंधे न करें विचार ।।१२।।
तौरेत अंजील और जबूर, चौथी कलाम अल्ला जहूर ।
ए चारों उतरियां जिनों पर, सो चारों नाम कहे पैगंमर ।।१३।।
मूसा ईसा और दाऊद, ए चारों आए बीच जहूद ।
और आखिरी कहे महंमद, खतम किया इत बांधी हद ।।१४।।
मनसूख[३] तीन कही ता मिने, फुरकान एक यों भने[४] ।
समझे ना किताबों के तांईं, क्या लिख्या है माएनों माहीं ।।१५।।
तौरेत लिखी ठौर बीसेक कही, सो जुदे जुदे नामों पर दई ।
ता बीच कहे अल्ला कलाम, कौल कयामत इन पर इसलाम ।।१६।।
अब को मनसूख और को कही हक, जाहेरी कोई न हुआ बेसक ।
और भी तुमको कहूं हक, बिना पाए मगज न छूटे सक ।।१७।।
कुरान लिख्या दिया चार ठौर, भी किताबें दैयां ठौर और ।
अब को अव्वल को कलाम आखिरी, ए नीके तुम ढूंढ़ो जाहेरी ।।१८।।

१. फिटकार । २. गुनाह । ३. रद्द । ४. कहे ।

किस्से कुरान के डारो तित, रद जमाने हो गए जित ।
ताए क्यों कहो यों कर, जो रोसनी होसी आखिर ॥१९॥

लिख्या अठारमें सिपारे, ले ऊपर के माएने सो हारे ।
ऊपर माएने ले देवे सैतान, जाको कहिए बेफुरमान ॥२०॥

जो कोई होसी बेफुरमान, नेहेचे सो दोजखी जान ।
ताको ठौर ठौर लानत लिखी, सोई जाहेरियों हिरदे में रखी ॥२१॥

अब और कहूं सो सुनो, महंमद को क्यों औरों में गिनो ।
गिरो महंमद तो होए पेहेचान, जो मगज माएने पाओ कुरान ॥२२॥

एक लाख भए बीस हजार, जिनों पैगाम दिए सिरदार ।
सात कलमें वाले पैगंमर, गिरो सबों की कही काफर ॥२३॥

उनों करी बेफुरमानी, ताथें गिरो सबों की रानी ।
अमेत सालून जो सूरत, तामें लिखी यों हकीकत ॥२४॥

महंमद की जो उमत भई, दस विध दोजख तिनकों कही ।
यामें फिरके कहे बहत्तर, तामे एक मोमिन लिए अंदर ॥२५॥

कौन गिरो जो अंदर लई, और कौन काफर हुए सही ।
वाही सूरत में कही पुलसरात, कौन गिरो चली बिजली की न्यात ॥२६॥

को निकसी घोड़े ज्यों पार, और कौन कटी पुलसरात की धार ।
खास गिरो साहेबें सराहीं, गिरो दूजी पीछे लगी आई ॥२७॥

और सैताने पीछी फिराई, सो सब दोजख को चलाई ।
ऐसे उलमा[1] सबही कहें, पर माएना बातून कोई न लहे ॥२८॥

अठारहें सिपारे लिख्या हरफ, बिना मगज न पावें आरिफ ।
बिना मगज न महंमद पेहेचान, बिना मगज ना पढ़्या कुरान ॥२९॥

बिना मगज न पाइए फुरकान, किन वास्ते आया फुरमान ।
एह वास्ता[2] पाइए तब, मगज माएनें खुलें जब ॥३०॥

१. विद्वान । २. कारन ।

खोल न सकें पढ़ें अल्ला कलाम, सो खोले उमी[1] सब मेहेर इमाम ।
अव्वल एही बांधी सरत, खुले माएने जाहेर होसी कयामत ॥३१॥

किन खोले न माएने कबूं कुरान, पावें न हकीकत करें बयान ।
पढ़े आलम आरिफ कई जन, पर एक हरफ न खोल्या किन ॥३२॥

अब देऊं दरवाजे खोल, कहूं हकीकत बातून बोल ।
जासों जाहेर होवे मारफत, दिन पाइए रोज कयामत ॥३३॥

साहेदी देवे अल्ला कलाम, सब दुनियां कबूल करे इसलाम ।
खोले माएने बातून हकी, मोमिन जाहेर करों बुजरकी ॥३४॥

लिखे सब माएने बातन, सो हनोज[2] लों ना खोले किन ।
सब खूबियां हैं बातन, खुले मगज सबों भई रोसन ॥३५॥

अव्वल खूबी अल्ला कलाम, दूजी खूबी गिरो इसलाम ।
तीसरी खूबी तीन हादी वजूद, आखिर आए बीच जहूद ॥३६॥

रसूल रूहअल्ला और इमाम, ए तीनों एक कहे अल्लाकलाम ।
बसरी मलकी और हकी, तीनों तरफ साहेब के साकी[3] ॥३७॥

आदम नूह मूसा इभराम, और अली भेला मांहें इमाम ।
महंमद ईसा पेहेले कहे, ए सातों कलमा आए इत भेले भए ॥३८॥

जेता कोई पैगंमर और, सारी सिफतें याही ठौर ।
सतरहें सिपारे यों कर कह्या, बिना महंमद कोई आया न गया ॥३९॥

और लिख्या अठारमें सिपारे, महंमद नाम पैगंमर सारे ।
सब पैगंमरों को जो सिफत दई, सो सिफत सब रसूल की कही ॥४०॥

ए मगज खोल्या कुरान, सुनो हिंदू या मुसलमान ।
जो उठ खड़ा होसी सावचेत, साहेब ताए बुजरकी देत ॥४१॥

कहे छत्ता तिनका अंकूर, नूर तजल्ला मांहें जहूर ॥४२॥

॥प्रकरण॥५॥चौपाई॥१४७॥

१. अनपढ़ । २. अभी तक । ३. पिलाने वाले ।

हो सैयां फुरमान ल्याए हम, आए वतन से वास्ते तुम ।
इन में खबर है तुमारी, हकीकत देखो हमारी ।।१।।

सिफत रसूल अल्ला कलाम, रूहअल्ला ईसा पाक इमाम ।
कही खास उमत महंमद, जाकी सिफत को न पोहोंचे सब्द ।।२।।

सोई कहूंगी जो लिख्या कुरान, सब्द न काढूं बिना फुरमान ।
या तो कहूं महंमद हदीस, भला मानो या करो रीस ।।३।।

दे साहेदी कहूंगी हक, सो देखो कुरान जाए होवे सक ।
अब लों जाहेर थी सरीयत, खोले माएने बातून हकीकत ।।४।।

अब सबमें जाहेर हुई कयामत, खुले कलाम जब पोहोंची सरत ।
लिख्या सिपारे सोलमें मिने, आगे राह न पाई किने ।।५।।

ए जो चौदे तबक की जहान, इनकी फिकर लग आसमान ।
जब लग आए रसूल महंमद, किने न छोड़ी अक्सा मसजिद ।।६।।

और लिख्या मेयराजनामें माहीं, जब हुआ मेयराज रसूल के तांई ।
रसूल चले पांउं सिर दे, संग एक जबराईल ले ।।७।।

चौदे तबक की खबर भई, ला मकान हवा को कही ।
निराकार कहिए सुंन, एही बेचून[1] बेचगून[2] ।।८।।

छोड़ याको आगे को गए, नूर बनमें दाखिल भए ।
जबराईल रह्या इन ठौर, ला मकान से ए मकान और ।।९।।

आगे चल न सक्या क्योंहीं कर, नूर तजल्ली जलावे पर ।
तहां पोहोंचे रसूल एक, तित अनेक इसारतें कही विवेक ॥१०॥

लिख्या दरिया मीठा मिश्री से पाक, तित कह्या मुरग चोंच में खाक ।
गिरो फरिस्तों करी इसारत, खाक वजूद नूर खिलकत ॥११॥

और कह्या देख दाहिंनी तरफ, मोतिन के मुंह पर कुलफ[3] ।
पूछा रसूलें कुलफ क्यों किया, तेरी उमतें गुनाह कर लिया ॥१२॥

१. अनुपम । २. निर्गुन । ३. फरामोशी का ताला ।

इनकी किल्ली तेरा दिल, खुले कुलफ जब आओ मिल ।
सब हकीकत बीच किताब, पर पावे सोई जिन पर होए खिताब ॥१३॥

और कई बातें खुदाए से करी, लिए नब्बे हजार हरफ दिल धरी ।
तीस हजार का हुआ हुकम, जाहेर करो दुनियाँ में तुम ॥१४॥

और कहे जो तीस हजार, ए तुम पर रख्या अखत्यार ।
बाकी रहे जो तीस हजार, आखिर इन पर है मुद्दार ॥१५॥

सो कयामत पर बांधे निसान, एही सरत जब खुल्या कुरान ।
अमेत सालून में एह बात, बिध बिध कर लिखी विख्यात ॥१६॥

रूहें कही बारे हजार, बुजरकी को नहीं सुमार ।
जिनकी इच्छासों फरिस्ता होए, बड़ा सबन का कहिए सोए ॥१७॥

सो रूहें दरगाह के मांहें, ऐसा नजीकी और कोई नाहें ।
सो ए रूहें आदमी सकल, ए आदमी इनकी नकल ॥१८॥

और लिख्या अठारमें सिपारे, नूर बिलंद से उतारे ।
काम हाल करें नूर भरे, नूर ले दुनियां में विस्तरे ॥१९॥

और जो अंधेरी से पैदा भए, काफर नाम तिनोंके कहे ।
फिरे मन के फिराए उलटे फेर, काम हाल उनों के अंधेर ॥२०॥

और लिख्या वाही सिपारे, ए कुरान से न होए न्यारे ।
फरिस्ते उतरे वास्ते कुरान, फरिस्तों पर आया फुरमान ॥२१॥

फौज फरिस्तों की भरी नूर, असराफील बजावे सूर ।
और तीसमें सिपारे एह बयान, इन्ना इन्जुलना सूरत परवान ॥२२॥

फरिस्ते नजीकी जो बुजरक, साथें हुकम धनी का हक ।
उतरे लैलत कदर के मांहें, तीन तकरार रात के जाहें ॥२३॥

रूहों फरिस्तों वजूद धरे, जोस धनी का ले उतरे ।
रात नूर भरी कही ए, जित रूहअल्ला के तन जो कहे ॥२४॥

एक तकरार हूद के घर, दूजे तकरार नूह किस्ती पर ।
तीसरा तकरार ए जो फजर, जित रूहें फरिस्ते पैगंमर ॥२५॥

खैर उतरी महीने हजार, गिरो दोए भई सिरदार ।
हुकम दिया सब इनके हाथ, भई सलामती इनके साथ ॥२६॥

आखिर मिलावा साहेब इत, रूहें फरिस्ते पैगंमर जित ।
याही सिपारे छत्तीसमी सूरत, नीके कर तुम देखो तित ॥२७॥

तीन सरूप खुदाए के कहे, तीनों तकरार रूहों बीच रहे ।
एक बृज बाल दूजा रास किसोर, तीसरे बुढ़ापनमें भोर ॥२८॥

दोए सरूप कहे मिने और, किल्ली कुरान ल्याए इन ठौर ।
पांच सरूप मिले इत नूर, असलू बीज मांहें अंकूर ॥२९॥

वजूद आदम का जैसा खाक, पांच पचीसों इनके पाक ।
आठमें सिपारे एह बयान, लिख्या जाहेर बीच कुरान ॥३०॥

एह दज्जाल जो अजाजील, सबमें दम इनका कमसील ।
न करे सिजदा ऊपर आखिरी आदम, फेरया जाहेर कलाम अल्ला का हुकम ॥३१॥

मांहें गया सबन को खाए, पढ़े ढूंढ़त जुदा[1] ताए ।
जाहेरियों न देवे देखाए, ऊपर माएने दिए भुलाए ॥३२॥

दाभ तूल-अर्ज माएने बातन, मुख आदम का गधी तन ।
बातून माएने कही कयामत, देखसी खुले हकीकत ॥३३॥

दज्जाल एक आंख जाहेरी, कई बिध तिनकों लानत करी ।
नाहीं दज्जाल आंख बातूनी, जासों मारफत पाइए धनी ॥३४॥

खोलने न दे आंख अंदर, दिल पर दुस्मन जोरावर[2] ।
पातसाही करे सबों के दिल पर, ए जो बैठा ले कुफर ॥३५॥

दुस्मन राह मारे इन हाल, भूले देखें बाहेर दज्जाल[3] ।
छठे सिपारे लिख्या इन पर, ईसा मारसी इन काफर ॥३६॥

१. शरीर से बाहर । २. शक्तिशाली । ३. शैतान (अबलिस) ।

करसी राज चालीस बरस, सब जहान होसी एक रस ।
साहेबी उमत की साल दस, पीछे चौदे तबकों बाढ़्यो जस ॥३७॥

अखंड भिस्त इत जाहेरी, होए रोसन सबमें विस्तरी ।
दुनियां दौड़ मिली सब धाए, छूट गए वरन भेख ताए ॥३८॥

कह्यो न जाए धनी को विलास, पूरी साथ सकल की आस ।
लीला विनोद करसी हाँस, ए सुख उमत लेसी खास ॥३९॥

ले दौड़े रोसनी दासानुदास, ले जाए पवन ज्यों उत्तम बास ।
इस्क न खाने देवे स्वांस, ज्यों अगनी न छोड़े दाना घास ॥४०॥

जाए पड़े प्रेम के फांस, ज्यों सूके लोहू गल जाए मांस ।
पीछे तीसों नूर बरसात, तिन आगूं आवसी पुल-सरात ॥४१॥

सत्तर बरस लों आग जलाए, तब फरिस्ते दिए चलाए ।
अजाजील विरहा आग जल, पीछे असराफीलें किए निरमल ॥४२॥

आगे असराफीलें कायम किए, तेरही में नूर नजर तले लिए ।
नूर नजर तले हुए सुध, आए मांहें जाग्रत बुध ॥४३॥

नतीजा पावे सब कोए, सो हुकम हाथ छत्रसाल के होए ॥४४॥

॥प्रकरण॥६॥चौपाई॥१९१॥

हुइयां सोभा तेरी सोहागनियां, इन जुबां न जाए बरनियां ।
ए जो मिलावा माननियां, ताए बड़ाइयां दैयां धनियां ॥१॥

कदम हादी मेरे सिर पर, जो सब दीनों का पैगंमर ।
हजरत ईसा रूहअल्ला नाम, कहूंगी जो कह्या अल्ला कलाम ॥२॥

रसूल रूहअल्ला और इमाम, इन तीनों मिल मोको दई ताम ।
मैं सिर पर ए लिए कलाम, आए कुंजी बका की करी इनाम ॥३॥

ए साहेदी सिपारे सूरत, जो उतरियां अल्ला आयत ।
या तो हदीसें कहूं महंमद, या बिन और न कहूं सब्द ॥४॥

बावन मसले जो कहे अरकान, जो बजाए ल्यावे मुसलमान ।
तिनका कौल था एते दिन, सांचे पाक दिल किए जिन ।।५।।

ए बंदगी कही सरीयत, याको फल पावें खुले हकीकत ।
जब खोले दरवाजे मारफत, पोहोंची सरत आई कयामत ।।६।।

और लिख्या सिपारे पांचमें, सो नीके कर देखो तुमें ।
कृपा भई हिंदुओं पर घनी, जित आखिर को आए धनी ।।७।।

सब पैगंमर आए इत, कह्या सब मुलक नबुवत ।
जो कोई आया पैगंमर, सो सारे जहूदों के घर ।।८।।

ज्यों अव्वल त्योंहीं आखिर, सोभा सारी महंमद पर ।
ए तुम देखो नीके कर, सारे कुरान में एही खबर ।।९।।

लोक ढूंढ़ें मांहें मुसलमान, सूझत नाहीं जो लिख्या कुरान ।
अव्वल सिपारे एह सुध दई, सो मैं जाहेर करहों सही ॥१०॥

हरफ अलफ लाम और मीम, ए तीनों एक कहे अजीम ।
जिन न जान्या एह जहूर, सो काट कुरान से किए दूर ॥११॥

याको जाने खुदा एक, ऐसो बांध्यो बंध विवेक ।
कलाम अल्लाएँ ऐसी कही, आलम[१] आरिफ[२] की हुज्जत ना रही ॥१२॥

और लिख्या है बीच कुरान, दूसरे सिपारे में एह बयान ।
इनका जित खुल्या है द्वार, तिनका दिल दे करो विचार ॥१३॥

ए महंमद पर दिया खिताब, माएने खोले सब किताब ।
सो माएने रूजू[३] उमतसें होए, खासी उमत कहिए सोए ॥१४॥

महंमद की इनपे पेहेचान, भली भांत समझें कुरान ।
जैसे पेहेचानने का हक, इन उमत को नहीं कोई सक ॥१५॥

जिनको किताब दई तौरेत, सब दुनियां को एही सुख देत ।
मांहें लिख्या सिपारे उन्तीस, जाए देवें खुदा तासों कैसी रीस[४] ॥१६॥

१. विद्वान । २. ब्रह्मज्ञानी । ३. स्वीकार करते हुए प्रसार करना । ४. स्पर्धा - बराबरी ।

आए ईसा रूहअल्ला पैगंमर, गिरो जहूदों बनी असराईल पर ।
जो गिरो बनी असराईल की भई, सो औलाद याकूब की कही ॥१७॥

हुए सामिल रसूल महंमद, रूहअल्ला इस्म[1] हुआ अहमद ।
संग रोसन तौरेत कुरान, सो रान्या[2] जाए न हुई पेहेचान ॥१८॥

भए जहूदों के बड़े बखत, पाई बुजरकी आए आखिरत ।
इत जाहेर हुए इमाम हक, सोई काफर जो ल्यावे सक ॥१९॥

उल्लू न चाहे ऊग्या सूर, जिन अंधों का दुस्मन नूर ।
ए सुन वाका[3] जो न ल्यावे ईमान, सोई चमगीदड़ उल्लू जान ॥२०॥

महंमद के कहावें मुसलमान, ए जो जाहेरी लिए ईमान ।
जो तौहीद का कलमा कहे, उमत सरीकी लिए रहे ॥२१॥

जो होए इस्क आकीन साबित, तोभी झूठी ए सरीकत ।
सिरे न पोहोंच्या इनका काम, ऐसा लिख्या मांहें अल्ला कलाम ॥२२॥

सिपारे तीसरे में कही, पांच वज्हे[4] की पैदास भई ।
दुनियां हुई केहेते कलमें कुंन, एक एक हाथ एक दो हाथन ॥२३॥

एक सरूप कह्या एक हाथ, दो हाथ सरूप मिले दो साथ ।
रसूल रूहअल्ला और इमाम, एक सरूप तीनों बिध नाम ॥२४॥

एक गिरो आई मूलथें कही, सो मौजूद रूहें दरगाह की सही ।
दूजी गिरो कही खिलकत और, सो मलायक मुतकी नूर ठौर ॥२५॥

तीसमें सिपारे लिखी ए बिध, सो क्यों पावे बिना हिरदे सुध ।
नूह नबी के बेटे तीन, तिन में स्याम सलाम अमीन ॥२६॥

मुस्लिम किस्ती पार पोहोंचाए, काफर तोफानें दिए डुबाए ।
ए तीनों मिल दुनी रची और, सो तीनों आए जुदे जुदे ठौर ॥२७॥

चांद कह्या आरब फारस, रोसन स्याम लियो बड़ो जस ।
चांद आरब दूजा कौन होए, इत महंमद बिना न पाइए कोए ॥२८॥

१. नाम । २. रद्द । ३. वचन । ४. प्रकार ।

पेहेले किस्ती दई पोहोंचाए, इत फुरमान ल्याए रसूल केहेलाए ।
हिसाम चांद कह्या हिंदुस्तान, ए जो पूज्या हिन्दुओं साहेब जान ॥२९॥

याफिस आया तुरकस्थान, तो न सक्या कोई पेहेचान ।
आजूज माजूज औलाद इन, तीन फौजां होए खासी सबन ॥३०॥

तीसरे सिपारे लिखे ए बोल, पढ़े न देखें दिल आंखें खोल ।
नूह का बेटा बुजरक स्याम, जाको दोनों जहान में रोसन नाम ॥३१॥

स्याम ल्याए चीजें दोए, चौदे तबकों न पाइए सोए ।
एक देवे अल्ला की ग्वाही, दूजी करे बयान हुकम चलाई ॥३२॥

पूछे रसूल सों दोए सुकन, सो साहेब ने किए रोसन ।
ए दोनों बात खुदाए से होए, इनको पूजेंगे सब कोए ॥३३॥

तोफतल कलाम जो है किताब, ए लिख्या तिस बीच आठमें बाब ।
उमतें सब पैगंमरों की मिली, सब दिलों आग दोजख की जली ॥३४॥

जलती सब पैगंमरों पे गई, पर ठंढ़क दारू काहू थें ना भई ।
हाथ झटक के कह्या यों कर, हम सब सरमिंदे पैगंमर ॥३५॥

सब दुनियां को एही दिया जवाब, महंमद इनको लेसी सवाब ।
सब दुनियां जलती महंमद पे आई, दोजख आग रसूलें छुड़ाई ॥३६॥

सबों को सुख महंमदे दिए, भिस्त में नूर नजर तले लिए ।
कहे छत्ता अपनायत[1] कर, जिन कोई भूलो ए अवसर ॥३७॥

हुई फजर मिट गई वाद, भूले बड़ो करसी पछताप ॥३८॥

॥प्रकरण॥७॥चौपाई॥२२९॥

लिख्या सिपारे आखिरे सात दसमी सूरत, रोसन कुरान लिखी हकीकत ।
मोमिनों का लिख्या मजकूर, सो ए कहूं सब देखो जहूर ॥१॥

पाई खलासी मोमिन, हुआ मकसूद सबन ।
ऐसे होवे जो कोई, सांची बंदगी में सोई ॥२॥

१. अपना जान कर ।

रखो खुदाए का डर, बंदे सिजदे पर नजर ।
किया कबूल एह जहूर, दरगाह साहेब के हजूर ।।३।।
पैगंमर हजरत, निमाज अदा इन सरत ।
ऊपर से आयत आई, तब नजर आसमान से फिराई ।।४।।
किया सिजदा मूल वतन, जो दरगाह बड़ी है रोसन ।
यों कह्या बीच लवाब, ए हमेसां मूल सवाब ।।५।।
जो बका साहेब का घर, रखो दीदे धनी नजर ।
ए सिजदा तब पाइए, खूबी घर की देखी चाहिए ।।६।।
जब ए हुई खुसाली, तब भूले सिजदे खाली ।
निमाज के बखत दिल धर, छूटी दाएँ बाएँ नजर ।।७।।
हुआ साहेब का करम, पाया भेद बीच हरम ।
हुई कबूल निमाज इन हाल, हुए साहेब सों खुसहाल ।।८।।
सिर से छूट गया करज, हुए मोमिन बेगरज ।
छूटा मूल जो हुकम, हुआ सिजदा हजूर कदम ।।९।।
सो ए करता हों मैं तफसीर, जुदे कर देऊं खीर और नीर ।
पेहेले था बेहेरूल्हैवान[1], तब तो तिन में था फुरमान ।।१०।।
अब दरिया हुआ हक, इन में न रहे किसी की सक ।
दरिया हक बीच मजकूर, कह्या जाहेर खुसाली नूर ।।११।।
सुरत दाएँ बाएँ भान, सिर आगूं धरिया आन ।
खड़ा रहे दोऊ हाथ पकर, सो सके हजूर बातां कर ।।१२।।
हुआ साहेब सों परस, दिल से छूटी हवा हिरस ।
भेद पाया सिरर[2] हक, मासूकी दरिया बीच हुआ गरक ।।१३।।
सो ए रोसन जहूर निसान, खूबी नूर बिलंद गलतान ।
एह बात जिनोंने पाई, बीच तेहेकीक के फुरमाई ।।१४।।

१. पशुवृत्ति का सागर । २. रहस्य ।

अव्वल एही है निमाज, जो गुजरे साहेब सिरताज ।
मिले वाही के तालिब, हुआ चाहिए दोस्त साहेब ॥१५॥

जब तें एह आसा मेटी, तब तो तूं साहेब सों भेंटी ।
जो लों कबू देखे आप, तो लों साहेब सो नहीं मिलाप ॥१६॥

जो लों कछुए आपा रखे, तो लों सुख अखंड न चखे ।
तसबी गोदड़ी करवा, छोड़ो जनेऊ हिरस हवा ॥१७॥

दोऊ जहान को करो तरक, एक पकड़ो जो साहेब हक ।
या हँस कर छोड़ो या रोए, जिन करो अंदेसा कोए ॥१८॥

जो ए काम तुमसे होए, तब आई वतन खुसबोए ।
और फैल झूठे जो कोई, काफर गुस्सेसों कहे सोई ॥१९॥

केहेत इमाम केसरी, खुदा इन वास्ते नई आयत करी ।
खासा सोई है बुजरक, ए साहेब कहे बेसक ॥२०॥

और जो कोई साहेब सों फिरे, काम दुनी का दिल में धरे ।
याही में पावे आराम, सोए रहे छल बाजी काम ॥२१॥

साफ कौल इनोंके फैल, यामें नाहीं जरा मैल ।
ऐसी जो कोई धनी मिलक, तिनों जगात देनी हक ॥२२॥

देना है ठौर बुजरक, आप सदका[1] देना बलक ।
छोटा बड़ा जो नर नार, ए सबन पर है करार ॥२३॥

ऐसी गिरो जो दरगाही, ताए रखना आप दृढ़ाई ।
जेती बातें हैं हराम, ए नजीक नाहीं तिन काम ॥२४॥

या अपना या बिराना[2], सब परहेज किया दिल माना ।
तिस वास्ते ऐसी जानी, हाथ साहेब के बिकानी ॥२५॥

दाहिनी तरफ जो है हक, ए लड़कियां तिन की मिलक ।
निगाह रखे जानें सुपना, इंद्रियों से आप अपना ॥२६॥

१. कुरबानी । २. दूसरा ।

इन भांत किया दिल धीर, उपजे नहीं कोई तकसीर ।
इन भांत की जो है औरत, तिन पाया रोज सरत ॥२७॥

और सुख ना नफसों आराम, और रह्या न चाहें बेकाम ।
और जेता कोई बद काम, सो नफसानी हिरस हराम ॥२८॥

जो ए काम ढूंढ़े बदफैल, काफर चाहे उलटी गैल ।
ऐसे जो हैं सितमगार[१], पाया न समया हुए खुआर[२] ॥२९॥

और जो कोई पाक गिरो आकीन, किया अमानत बीच अमीन ।
इत कही जो इसारत, ए जो पाक कही उमत ॥३०॥

ए पैदास अमानत हक, इत रोजा रबानी बेसक ।
याही बीच निमाज असल, रखे आपा कर गुसल ॥३१॥

इनके साथ बीच हक, कोई बांधे कौल खलक ।
निगाह रखे खड़ा रहे आप, सूरत आयत करे मिलाप ॥३२॥

कोई निगाह रखे निमाज करे, हमेसां कबहूं ना फिरे ।
रखे अदब बंदगी सरत, फुरमाया अदा सोई करत ॥३३॥

मूलथें बंदगी करे जिकर, करे सिफत निकोई[३] आखिर ।
ए जो मुतकी मुसलमान, करी इसारत ऊपर ईमान ॥३४॥

बंदगी एही है बुजरक, दूजी पाक गिरो बीच हक ।
गिरो मोमिन जमे करें, छे सिफतें वारसी धरें ॥३५॥

और जेती कोई वारसी नाम, सो ना पकड़ें हाथ हराम ।
जिनों किया साहेब तेहेकीक, लई मिरास[४] अल्ला नजीक ॥३६॥

जिनों भिस्त बिलंदी पाई, गिरो बड़े मरातबे पोहोंचाई ।
लई औरों भिस्त मीरास, जो रहे मोमिन बीच विलास ॥३७॥

बिना मोमिन ए जो और, ताको दोजख भिस्त बीच ठौर ।
और काफर दोजख में जल, देखें भिस्ती मरें जल ॥३८॥

१. जुलमी । २. बरबाद । ३. गुन, अंग, इंद्रिया । ४. तरीका ।

भिस्ती देखें दोजखियों दुख, देखें मोमिन होवे सुख ।
यों कह्या बीच मिसल जादिल, पावे ईमान बीच मिसल ॥३९॥

जो सके ना सांच कर, सो जले दोजख मांहें काफर ।
भिस्त दोजखी दूरथें देखें, त्यों त्यों जलें आप विसेखें ॥४०॥

ए जो कहे भिस्त वारस, रेहेने वाले भिस्त हमेस ।
इन आदम की पैदास, किया बीच खलक के खास ॥४१॥

खैंच किया सबों के आगे, मोमिन इनपे पेसवा[1] लागे ।
बीज मिट्टी दुनियां की न्यात, पर ए पाक साफ कही जात ॥४२॥

एक किया इसकी नकल, दूजा पाक कह्या असल ।
आया इन तरफ बहार, जिनों पकड़्या पाक करार ॥४३॥

नूस्खे रेहेमत मदतगार, इन ठौर भया उस्तुवार[2] ।
तीन सरूप की एह बयान, सो ए कहे एक के दरम्यान ॥४४॥

सिफत तीनों की जुदी कही, सो सब बुजरकी एक पर दई ।
ज्यों बसरी मलकी हकी, त्यों रसूल रूहअल्ला इमाम पाकी ॥४५॥

न पावें ऊपर माएने जाहेरी, ए मगजों सों इसारत करी ।
एक सरूप अवस्था तीन, ज्यों लड़का ज्वान बुढ़ापन कीन ॥४६॥

तीन सरूप चढ़ती उतपनी, चढ़ती चढ़ती कही रोसनी ।
खोली राह आखिर बाग की, तंग सेती पोहोंचे बुजरकी ॥४७॥

बिध बिध की न्यामत पोहोंचाई, और कई तरबियत[3] फुरमाई ।
लड़के सेती पोहोंचे ज्वान, रख्या कदम हक बयान ॥४८॥

पाई सेखी हुए बुजरक, नेक न सक करते हक ।
लायक खुदाए के करी सिफत, पैदा किया अर्स दोस्त ॥४९॥

कुरसी फिरस्ते लोहकलमी[4], कायम सितारों आसमान जिमी ।
पीछे आदम के पैदा भया, जात पाक से दोस्त कह्या ॥५०॥

१. आगेवान । २. मजबूत । ३. खुलासा - सिखापन । ४. परमात्मा की कलम से लिखी बात ।

बुजरकी दलील फुरमाई, आदम पर बकसीस बड़ाई ।
मेहेर करी ऊपर सूरत, इन मेहेर की करी न जाए सिफत ॥५१॥

जो कह्या इन सेती नूर, सच्चे सूर कहावें जहूर ।
इनका रंग है तकव्वल[१], सिर बिलंदी ताज सकल ॥५२॥

और मिले गिरदवाए लोक, हुआ बुजरकी का गले में तोक[२] ।
ए बकसीस और से रोसन, उन सुने गैब के सुकन ॥५३॥

एह बात ए पैदास कही, सो सिफत सब महंमद पर भई ।
ए तीनों सिफतों भया रसूल, ए सजीवन मोती कह्या अमोल ॥५४॥

इन मोती को मोल कह्यो न जाए, ना किनहूं कानों सुनाए ।
सोई जले जो मोल करे, और सुनने वाला भी जल मरे ॥५५॥

बाजे कहे साहेब इस्क, सबसे जुदा ए आदम हक ।
जैसे जात पाक सुभान, एह मरातबा किया बयान ॥५६॥

हद सबोंकी करी जुबांन, क्या कोई कहे ए सिफत जहान ।
अब कहूं मैं इनकी बात, जो कह्या आदम पाक जात ॥५७॥

सो अफताली[३] महंमद का भया, जो आदम ऐसा बुजरक कह्या ।
ए पैदा हुआ कारन महंमद, एह रसूल की कही हद ॥५८॥

जो सिफत आदम की कही न जाए, तो महंमद की क्यों कहूं जुबांए ।
ए दोऊ सिफत सरूप जो एक, तीसरा साकी इन में देख ॥५९॥

ईसा आदम महंमद नाम, ए तीनों एक मिल भए इमाम ।
और जो कहे मुरदों की भांत, साकी प्याले होसी कल्पांत ॥६०॥

सो सारे फना आखिर, जेती वस्त कही जाहेर ।
जिन माएने लिए ऊपर, सो ए वजूद को रहे पकर ॥६१॥

जाहेर जिनकी भई नजर, कयामत बदला कह्या तिन पर ।
करे जिमीन सात आसमान, वास्ते उमत महंमद दरम्यान ॥६२॥

१. ईश्वरीय विश्वास । २. फंदा । ३. खिताब - उपाधि ।

सात हजार राह फरिस्ते, करी इसारत दुनी कयामते ।
अब खुदाए ने यों कर कह्या, मैं आसमान जिमी से जुदा रह्या ॥६३॥

जेती कोई पैदाइस कुंन, मोको तिन थें जानो भिंन ।
मैं ना इन में ना इनके संग, बेसुध कहे सब इनके अंग ॥६४॥

मेरे इनसों नहीं मिलाप, मैं बेखबरों में नाहीं आप ।
मैं इनों सों नहीं गाफिल[१], ए दुख सुख में रहे मिल ॥६५॥

सिरक[२] इनों की मैं जानों सही, बिना खबर याकी जरा नहीं ।
ऊपर से उतर्‌या पानी, तिन से नेकी बंदों की जानी ॥६६॥

मरतबा इनों देऊं उस्तुवार, इन पानी से होए करार ।
इबन अबास करे बयान, आया पानी इन दरम्यान ॥६७॥

पांच नेहेरें जबराईल पर, आइयां भिस्त से उतर ।
पांचों कही जुदे जुदे ठौर, बिना इमाम न पावे और ॥६८॥

उतरियां सरूप पांच चसमें, रहियां एक झिरने सच में ।
हिंद बलख और कही मिसर, कौल पाया करार पत्थर ॥६९॥

ए मेला हुआ आखिर दिन, तब नफा मसलहत[२] पाया सबन ।
दजला फिरात जुदी कही, जाहेरी माएने भेली न भई ॥७०॥

चसमें पहाड़ जारी करे, चसमें कायम पानी भरे ।
कह्या जिमी ए बादल पानी, जिनसे साबित भई जिंदगानी ॥७१॥

उतर्‌या पानी ऊपर ले जाए, सब कर सके जो कछू ए चाहे ।
इन वीरजमें होवे आप, और दूर दुनी संग नहीं मिलाप ॥७२॥

इन समें उतर्‌या आजूज, और संग इनके माजूज ।
पीछे उतर्‌या जबराईल, लेवे सबको न करे ढील ॥७३॥

एक मक्के का काला पत्थर, कुरान और खुदाए का घर ।
और ठौर कह्या इभराम, और यार महंमद आराम ॥७४॥

१. बेखबर । २. हकीकत ।

पीछले जेते गए दिन, बाकी कोई न रेहेवे किन ।
एक बेर फना सब किए, फेर कायम उठाए के लिए ॥७५॥

ए पांचों नेहेरें कही जो पानी, जिनसे दुनियां भई जिंदगानी ।
बागोंने[1] ताजगियां[2] पाई, सो भी पानी हादी ने पिलाई ॥७६॥

सो भी कहे भिस्त के बाग, जिनसे खेती पायो सोहाग ।
इनकी मैं करों तफसीर, जुदे कर देऊं खीर और नीर ॥७७॥

उमत लाहूती कही अंगूर, दूजी जबरूती कही खजूर ।
मलकूती को खेती कही, इनको बड़ाई उनथें भई ॥७८॥

दोऊ कायम भई उमत, उठे बीच हादी कयामत ।
तीसरी कायम भई दुनियां और, तिन सबों की हज[3] इन ठौर ॥७९॥

और दुनियां ने सब फसल पाई, उमत बाग हासिल आई ।
एह खुदाए का बरस्या नूर, देखो छत्ते का जहूर ॥८०॥

हुआ खुदाए के हजूर, बात याही की हुई मंजूर ॥८१॥

॥प्रकरण॥८॥चौपाई॥३१०॥

लिख्या सिपारे सूरतों, और आयतें देखो जाए ।
कयामत कलाम अल्लाह में, ठौर ठौर दई बताए ॥१॥

अब लों तारीख आखिर की, न पाई कुरानथें किन ।
सो रूहअल्ला के इलम से, जाहेर हुई सबन ॥२॥

सबों सिपारों कयामत, एही लिख्या है मजकूर ।
पर क्यों पाइए हादी बिना, कलाम अल्ला का नूर ॥३॥

आगूं नव सदीय के, कह्या होसी रूहों मिलाप ।
बुजरक मिलावा होएसी, देवें दीदार खुदा आप ॥४॥

बाकी दसमी सदीय के, सवा नव साल रहे ।
गाजी मिसल मोमिन की, रूहअल्ला उतरे कहे ॥५॥

१. अतृप्त आत्माएं । २. अमरज्ञान से तृप्ति । ३. तीर्थ यात्रा ।

रूहअल्ला रोसन ज्यादा कह्या, दूजा अपना नाम ।
एक बदले बंदगी हजार, ए करसी कबूल इमाम ।।६।।
बीच अग्यारहीं सब रोसनी, ज्यों ज्यों मजलें भई जित ।
हक न्यामत लई हादियों, त्यों लिखी कुरान में तित ।।७।।
एक जामा हजरत ईसे का, मिल दोए भए तिन ।
मुद्दतें एक जुदा हुआ, साल सतानवें पोहोंचे इन ।।८।।
किताब इलाही उतरी, गैब से आई इत ।
महीनें आठ लों उत जुध हुआ, चले मदीने से इन सरत ।।९।।
पांच किताबें पेहेचान से, हुकमें हाथ दई ।
ए साल निन्यानवें लिख्या, गंज छिपे जाहेर भई ॥१०॥
लकब[१] इद्रीस जान्या गया, सौ साल की मजल ।
जित तीस वरक[२] खुदाए के, हुए थे नाजल[३] ॥११॥
टोना[४] कह्या महंमद पर, अग्यारे गांठ लगाए ।
वह गांठें छूटे बिना, काहू ना सकें जगाए ॥१२॥
दस पर एक सदी भई, छूट गई गांठें सब ।
आमर[५] महंमद आखिर हुई, ठौर पोहोंचे मोमिन सब ॥१३॥
दस और दोए बुरज[६] कहे, वह बारहीं सदी कयामत ।
क्यों पावे बंधे जाहेरी, बुजरक इन सरत ॥१४॥
दसमी से दोए भए, सो हादी दोए बुजरक ।
आखिर जमाना करके, पोहोंचाए सबों हक ॥१५॥
इन बीच जो गुजरे, तिन बरसों की तफसीर ।
दस अग्यारहीं तीस बारहीं, और सत्तर की जंजीर ॥१६॥
इन दसों उमत खासी चली, दुनी चली तीस भए जब ।
पुल-सरात[७] सत्तर कहे, पोहोंची आखिर फरिस्तों तब ॥१७॥

१. उपाधि । २. पृष्ठ । ३. अवतरित । ४. जादू । ५. हुकम । ६. नक्षत्र । ७. सरियत का रास्ता ।

पीछे तेरहीं में उठ खड़े, सुख कायम पोहोंचे सब ।
आठों भिस्त विवेक सों, हुए नजरों न छूटे अब ॥१८॥

॥प्रकरण॥९॥चौपाई॥३२८॥

चौथे सिपारे में लिखी, सो रोसनी मैं दिल में रखी ।
जाहेर करों वास्ते उमत, खोलों बातून आई सरत ॥१॥

केतों के मुंह उजले भए, केतों के मुंह काले कहे ।
कैयों आकीन कई मुनकर, यों लिख्या होसी आखिर ॥२॥

हक ताला ने किया फुरमान, डांटत हैं कीने[१] कुफरान ।
अंजील तौरेत से जो फिरे, सोई काफर हुए खरे ॥३॥

काफर दिल में कीना[१] आनें, अंजील तौरेत पर मारे ताने ।
जो खुदाए का पैगंमर, तिनसे फिरे सो हुए काफर ॥४॥

जुबां आकीन कयामत न मानें, ऊपर इसलाम के कीना आनें ।
उनसे जो हुए मुनकर, सोई गिरो कही काफर ॥५॥

मुनकर हुकम और कयामत, हुए नाहीं नेक बखत ।
फंद मांहें हुए गिरफ्तार, भमर हलाकी[२] पड़े कुफार ॥६॥

उस्तुवार[३] न पाई सुंनत, ए जो हुए बदबखत ।
सुपेत मुंह कहे मोमिन, पाई राह जमात से तिन ॥७॥

नव सदी के आगे रोसन, कह्या होसी भिस्त का दिन ।
अरफा आगे रोज भिस्त, जाहेर होसी सबों सरत ॥८॥

रूहोंका होसी मिलाप, जो बीच दरगाह के आप ।
होसी अल्ला का दीदार, मिलसी तीनों इत सिरदार ॥९॥

ए हमेसां हैं भिस्तके, नहीं बराबर कोई इनके ।
सुपेत मुंह रहें मस्त, खुदाए की राह पर करी है कस्त[४] ॥१०॥

१. द्वेष । २. तबाही । ३. दृढ़ता । ४. मेहनत ।

जो गुजरया बीच इन सूरत, खबर हुकम हकीकत ।
ए जो कही आयत साहेब, सो पढ़ी मैं कहे महंमद ॥११॥

॥प्रकरण॥१०॥चौपाई॥३३९॥

ए रोज नाहीं खिलाफ, होसी नव सदी आगूं मिलाप ।
कलाम अल्ला का जाहेर नूर, अग्यारे सिपारे का जहूर ॥१॥
ए लिख्या वास्ते सबब[१] इन, बदले नेक खूब कारन ।
बीच राह हक के एक, तिन नेकों का बदला नेक ॥२॥
उनसों ज्यादा मिल्या है जित, बोहोतक सवाब[२] लेना है तित ।
बोहोतायत बीच यों नबिएँ, सो मिसल गाजियों बीच जाहेर किए ॥३॥
तिन पर बंदगी एक करे कोए, सो हजार बंदगियों से नेक होए ।
तिनको सवाब बड़ा बुजरक, देवे एही साहेब हक ॥४॥
नव सै नब्बे हुए बरस, और नव मास उतरे सरस ।
तिनसे दूसरा होए मकबूल[३], सो ए बंदगियां करे कबूल ॥५॥
सो बकसीस करे सब ए, बदले एक के हजार दे ।
इनके बराबर ऐसे कर, कोसिस करे खुदाकी राह पर ॥६॥
खिलाफ राह चलें काफर, दुनियां को देखावें डर ।
ए जो सरत कही इस दिन, उस बखत उतरे मोमिन ॥७॥
होए आवाज लड़ाई बखत, तिस पर मोमिन करें कस्त ।
कस्त करें सब आरब, ए आयत उतरी हैं तब ॥८॥
ना रवा[४] मोमिन ना चाहें, घर छोड़ बाहेर लड़ने को जाएँ ।
होए सेहेर उजाड़ बखत सोए, खाने पीने की ढील होए ॥९॥
जब पोहोंचे एह सरत, बाहेर न जाना तिन बखत ।
हर एक जमात बोहोत मेला, हर इन की सों मुराद[५] किबला[६] ॥१०॥
जिन सिर कह्या वह गाम, तिन छोड़ न जाए लड़ाई काम ।
बाकी लोक पीछे जो रहे, जब वह तलब दानाई चहे ॥११॥

१. कारण । २. पुण्य । ३. स्वीकृत । ४. अनुचित (वर्जित) वस्तुएँ । ५. आशय । ६. पूज्य स्थान ।

जो कोई गाम के हैं, तिनको इलम दीन का कहे ।
सवा नव बरस दसमी के बाकी, इतथें मजकूर भई है ताकी ॥१२॥
॥प्रकरण॥११॥चौपाई॥३५१॥

कुरान तफसीर जो हुसेनी, बुजरक एह पेड़ से केहेनी ।
मरद तीनों पर है मुद्दार, जो कलाम अल्ला कहे सिरदार ॥१॥

ए तीनों सूरत हैं एक, सो रसूल तीनों सरूप विसेक ।
सब नामों बुजरकी लिखी जित, मगज खुलें सब देखोगे तित ॥२॥

ल्याए फुरमान केहेलाए रसूल, पर ताए खुले जाए खिताब मूल ।
ए इलम ले रूहअल्ला आया, खोल माएने इमाम केहेलाया ॥३॥

दसमी के सवा नव बरस, ता दिन पैदा सरूप सरस ।
पीछे जो तीसरा हुआ तमाम, वह चांद ए सूरज आखिरी इमाम ॥४॥

कहों कुरान देखियो अंदर, पट उड़ाऊं आड़ा अंतर ।
उस ईसे पीछे जो उस्तुवारी, सो तो कायदे खुदा के सिफत सारी ॥५॥

बुनियाद[1] रसूल सोई आखिरी, ए सिफत सारी इनकी करी ।
इन इमाम औलाद जो यार, पाक दरूद करे हुसियार ॥६॥

एक से इसारत दूसरे, बिलंद[2] अस्थाने खुसखबरे ।
इन देहरी[3] की सब चूमसी खाक, सिरदार मेहेरबान दिल पाक ॥७॥

आगे चलने की निसानी, पातसाह नजीक दरगाह पेहेचानी ।
मिल्या कह्या मुलक पातसाही, सो खासी गिरो रूहें दरगाही ॥८॥

उतपन अपनी बड़ी दौलत, औलाद यार दोऊ बाजू उमत ।
बड़े साहेब की ए पातसाही, जाहेर हुआ खंभ खुदाई ॥९॥

जिनमें हुकम किया इसलाम दीन, दौलत दई सबों आकीन ।
मोती कह्या डब्बे बुजरक, उतहीं का सितारा हक ॥१०॥

१. नींव । २. ऊंचे, बड़ा । ३. चौखट ।

दबदबे[1] का रोसन सूर, मेहेरबानगी साया खुदाए का नूर ।
ए सारे जो कहे निसान, सो पावे हादी से होए पेहेचान ॥११॥

सिरदार अस्वार इज्जत मैदान, आली सेर इन दरगाह का जान ।
इन पातसाह ऐसा जमाना, बकसीस चाहे बखत की पना ॥१२॥

इन गुलजारी[2] की खुसबोए, रोसन होवे दिल रूह दोए ।
सब दुनियां में अकल इन, करे पसारा एक रोसन ॥१३॥

चांद सूरज दोऊ कही दौलत, मिने चार बिलंदी और मिलत ।
जबराईल रोसन वकील, बुध नूर की असराफील ॥१४॥

रूहअल्ला ईसे का नूर, महंमद हुकम सदा हजूर ।
ए इमाम की सब कही सिफत, मोमिन मुतकी दोऊ साथें उमत ॥१५॥

ढूंढेंगे हरघड़ी मरतबा, दुनियां सिर रसूल दबदबा ।
बिलंद दुनियां का हुआ आसमान, होए चाह्या मरतबा पावे पेहेचान ॥१६॥

इन सरूप पर खुदाए का प्यार, दोनों जहान का खबरदार ।
पाया साहेब थें नेक बखत, दोऊ जहान बुजरकी पावे इत ॥१७॥

सब रोसनाई तमामियत, पाई बुजरकी कर कर कस्त ।
ल्याया मुंह सब किताब, नजर चारों पर खुली सिताब ॥१८॥

जवेर बयान तोहफे[3] हुकम, चार जिलदों पर दई खसम ।
तलब पाकी की पकड़ी, तरतीब[4] तमामियत[5] पाई बड़ी ॥१९॥

पेहेली जिलद तमामियत, ले हाथ बिलंद पनाह पोहोंचत ।
कबूलियत पाई है जित, बोहोत साथ मिलावत ॥२०॥

लिखना बाकी जिलद का है, सो तले तरजुमें लिखना कहे ।
जुदियां कर मिलाइयां जंजीर, सो कौन पावे बिना महंमद फकीर ॥२१॥

पेहेली तारीख पाई बुजरक, मेहेरम[6] थे तिन पाया हक ।
इत थें बरस सत्तानवें, तित दूजे जामें जाहेर भए ॥२२॥

१. रोब । २. फुलों की वर्षा करने वाली (सुगंधित श्रीमुख वाणी) । ३. उपहार । ४. शिक्षा । ५. पूर्णता । ६. नजदीकी (ब्रह्मात्माओ ने) ।

गैब आवाज हुई इसारत, उतरी इलाही इन सरत ।
आठ महीने हुए तिन पर, तब पेहेली किताब भई मयसर[१] ॥२३॥

ए जो आलम जात खुदाई, गरीबी परेसानी बंदों पर आई ।
आगे हुसेन किया बयान, वास्ते रसूल हाथ फुरमान ॥२४॥

ए दूजे जामे की कही, तहां पांच बुजरकी भेली भई ।
आगे दिन केहेने कयामत, सोई खोलों मैं हकीकत ॥२५॥

॥प्रकरण॥१२॥चौपाई॥३७६॥

ए सिपारे पेहेले की कही, जंजीर सोलमें की मिलाऊं सही ।
तहां लिख्या है इन अदाए, बिना देखाए समझी न जाए ॥१॥

न था मैं परवरदिगार मेरे, बीच साहेब याद तेरे ।
कायदा उमेद गया सब भूल, मुझ ऐसे की द्वा करी कबूल ॥२॥

तुम कबूल मैं तरबियत पाई, खसलत तुमारी इन में आई ।
भी देखो तुम एह वचन, हजरत ईसे जो कहे रोसन ॥३॥

तेहेकीक मुझको है ए डर, खलक अपनी जो है हाजर ।
पीछे मेरे मोहीम[२] खैरात[३], जो वर पाए करे दीन की बात ॥४॥

पातसाही मेरी बीच उमत, कबूल करने को बजाए ल्यावत ।
पीछे मेरे मौत के कहे हजरत, चाहिए खलीफा[४] इस बखत ॥५॥

ना जनने वाली मेरी औरत, अठानवे बरस की मजल है इत ।
और बस बकस ना कर, नजीक तेरे तेहेकीक मुकरर ॥६॥

फरजंद[५] मेरे ऐसा होए, साहेब दीन हुकम का सोए ।
लेवे मीरास[६] इमामत, लेवे मुझ से हकीकत ॥७॥

एह मीरास कही मिलकत, इलम की लेवे हिकमत ॥८॥

॥प्रकरण॥१३॥चौपाई॥३८४॥

१. प्राप्त । २. अखंड ज्ञान रूपी संपत्ति । ३. दान । ४. अग्रणीय (अगुआ) । ५. लड़का । ६. उत्तराधिकार ।

औलाद याकूब कह्या इस्हाक, इनों का कबीला है पाक ।
पेहेले कही एही मजकूर, और बिध लिखी कर रोसन नूर ।।१।।

ए जो मिलाइयां हैं जंजीर, सो जुदे कर देऊं खीर और नीर ।
एही अगली फेर और बिध लिखी, सोई समझी चाहिए दिल में रखी ।।२।।

भेद न पाइए बिना तफसीर, ए दई सिच्छा[१] महंमद फकीर ।
खासा मुरीद ए जब भया, बेटा नजरी एहिया को कह्या ।।३।।

ईसा को कर गाया खसम, कलाम अल्ला ताए कही हुरम[२] ।
कुरान किताबें जिकर किया, नाम लिख्या ताको जिकरिया ।।४।।

जो बेटा नसली ईसे का था, सो कलाम अल्ला कहे जुदा रह्या ।
इन बिध केती कहूं जंजीर, कुरान कई भांतों तफसीर ।।५।।

हादिएँ इनको ऐसा किया, फरजंद[३] मेरे मुद्दा लिया ।
हे परवरदिगार मेरे, कबूल हुआ रजामंदी तेरे ।।६।।

अव्वल कौल इनके बेसक, जिनमें राजी होवे हक ।
पीछे इस के सिजदे सिर, द्वा करे जारी कर कर ।।७।।

करम खुदाए का साहेब सिजदे, पोहोंच्या कौल मोंह वायदे ।
इन समें सब कबूल करे, एह द्वा दिल सारी धरे ।।८।।

खुसखबरी तोहे जिकरिया, देता हों मैं यों कर कह्या ।
ए बेटा तुझे बकसिया, कह्या नाम उसका एहिया ।।९।।

पैदा किया एहिया को देख, आगूं वह मैं नाम एक ।
बीच ल्याए जादलमिसल, भांत बुजरकी नाम नकल ॥१०॥

आगूं इस के ऐसा नहीं नाम, ना माफक इस के कोई काम ।
बोहोत हुए कह्या इन रसम, कोई हुआ न आदमी इन इस्म[४] ॥११॥

बल्कि[५] एही है बुजरक, किया खुदाए पैगंमर हक ।
ना कछू मेहेतारी ने पाले, बाप के ना हुए हवाले ॥१२॥

१. शिक्षा । २. पत्नी । ३. लड़का (पुत्र) । ४. नाम । ५. अन्यथा ।

इमाम सालवी नकल आई, आगूं इस थें नकल फुरमाई ।
पीछे उसके ऐसा चहावे, बुजरकी बीच जहूरके ल्यावे ॥१३॥

पीछे उसके एते नाम लेवे, खासों में खासगी देवे ।
भांत भांत नाम जुदे बेसुमार, अपने नामें सब किए उस्तुवार ॥१४॥

आखिर अपने काम मजबूत, ए अरस परस नाम कह्या मेहेमूद ।
आखिर बुजरकी महंमद पर आई, खासी उमत महंमदें सराही ॥१५॥

इस्म धरे का माएना एह, ऐसी सबी कोई और न देह ।
ए तिस वास्ते ऐसा कह्या, गुनाह कस्त कोई जाहेर न भया ॥१६॥

हो साहेब मेरे जिकरिया यों केहेवे, मेरे फरजंद क्यों ऐसा होवे ।
मेरी औरत है इन हाली, सो तो नहीं जनने वाली ॥१७॥

अब मैं पोहोंच्या उमेद एती, बुजरकी पाइए इनसेती ।
ना कछू एती थी खबर, ना देहेसत लई दिल धर ॥१८॥

मोहे गरीबी और नातवान[1], ए बड़ाई आप सों हुई पेहेचान ।
होए पेहेचान जो मेरी चाहे, बिलंद करने जो कुदरत उठाए ॥१९॥

कहे फरिस्ते खुदा के हुकम, ए जिकरिया कह्या जो तुम ।
ए बात यों ही कर है, बुढ़ापा नातवानी कहे ॥२०॥

ए तेरे खुदाए ने कह्या, पैदा करने काम फरजंद का भया ।
कह्या बीच इस सिनसे[2], आसान खुदा के दो सकसों से ॥२१॥

तो सांचा एहिया पैदा किया, नाबूदसेंती बूद में लिया ।
बुजरकी सों खुदाए ने कही, जिकरिया फरजंद पोहोंच्या सही ॥२२॥

खुसखबरी सों हुआ खुसाल, पेहेले ना सुध थी वजूद इन हाल ।
ए बात जाहेर न जानी कबे, दूजे फेरे पोहोंचे इन मरतबे ॥२३॥

कहे जिकरिया साहेब मेरे, किन बिध वाका होसी तेरे ।
मेरी निसानी की खबर जेह, मोहे नहीं परत मालूम एह ॥२४॥

१. कमजोर । २. आयु ।

कह्या खुदाए ने निसानी तेरी, न सकेगा कहे हकीकत मेरी ।
मरदों से बात न होवे इन, केहेनी तीन रात और चौथा दिन ॥२५॥

ए बेटे नसली की जंजीर, ए पावें गिरो वचिखिन[1] वीर ।
लैलत कदर के तीन तकरार, दिन फजर का खबरदार ॥२६॥

ए क्या जाने फरजंद पैगंमरी, ए खिताब दिया एहिया नजरी ॥२७॥

॥प्रकरण॥१४॥चौपाई॥४११॥

छिपके साहेब कीजे याद, खासलखास नजीकी स्वाद ।
बड़ी द्वा मांहें छिपके ल्याए, सब गिरोह सों करे छिपाए ॥१॥

बरस निन्यानवेलों सरम, न करी जाहेर होए के गरम ।
बरस निन्यानवे कही हुरम[2], साथ ईसा के समझियो मरम[3] ॥२॥

सो ए ना जननेवाली कही, तलब बेटे की राखे सही ।
बूढ़ा ईसा आवाज करे, आस्ती आवाज कोई ना दिल धरे ॥३॥

पाँच जिल्दें इन मजलें पाई, तो लों बात करी छिपाई ।
जेता कछू केहेता पुकार, सुनने वाला न कोई सिरदार ॥४॥

आवाज उनकी थी इन पर, चाहे आप कोई लेवे खबर ।
ए सुनियो दूजी विख्यात, दूजे जामें की कहूं बात ॥५॥

कह्या सुनो मेरे परवरदिगार, धोए हाड़ बुढ़ापे नार ।
खंभ में वजूद इन घर, बूढ़े हाड़ सुस्त इन पर ॥६॥

कह्या होवे वजूद तमाम, इन सें भली भांत होवे काम ।
जो सिर मेरा हुआ सुपेत, तरफ रोसनी नहीं अचेत ॥७॥

अंदर ज्वानी है रोसन, काह[4] ज्यों पकड़े अगिन ।
उसही झलकार थें मकबूल, बूढ़े रोसनी न गई भूल ॥८॥

॥प्रकरण॥१५॥चौपाई॥४१९॥

१. अधिक चतुर । २. अंतःपुर । ३. भेद - रहस्य । ४. सूखी लकड़ी ।

ए जंजीर सिपारे सोलमें मांहें, बरस सौ की मजल है जांहें ।
याद किया मांहें कुरान, किस्से इद्रीस की पेहेचान ।।१।।
बेटा नवासे साहेब का, बाप दादा नूह था ।
अबनूस था उसका नाम, इद्रीस लकब[1] कह्या इस ठाम ।।२।।
ए लकब दिया है सांच कारन, मालूम हुआ वास्ते इन ।
अव्वल खत यों लिख्या कलाम, नजूम दरजी पना किया इसलाम ।।३।।
तीस वरक[2] हुए नाजल[3], ऊपर जामें कहे असल ।
बीच किताब ल्याए इद्रीस, पीछे आदम के सौ बरीस[4] ।।४।।
तेहेकीक वह था कहे खलक, एही सांच कहेगा हक ।
पोहोंचाया चौथे आसमान, बीच मेयराज भिस्त पेहेचान ।।५।।
पैगंमर की दरगाह साबित, रसूल इद्रीस फुरमाए मिले इत ।।६।।

।।प्रकरण।।१६।।चौपाई।।४२५।।

कह्या आम सिपारे मांहें, अग्यारै सदी लिखी है जांहें ।
हुकम हादी के खोलों इसारत, पाइए कौल जाहेर कयामत ।।१।।
दावा हुआ हजरत के सेती, ए करार बाँध्या सरत एती ।
नाम हजरत के सेहर[5] कही, अग्यारे गिरह रस्सी पर दई ।।२।।
रस्सी रखी कूएं के मांहें, ऊपर पत्थर दिया तांहें ।
जबराईलें कही खबर, भेज्या अली कूएं गया उतर ।।३।।
अली रस्सी ल्याया ऊपर, गिरह अग्यारैं सदी हुई नजर ।
अग्यारे आयत आई तत्पर, भेजी खुदा ने जबराईल खबर ।।४।।
इन पढ़ने रसूल खबर भई, हर आयत हर गिरह खुल गई ।
उमर रजीअल्ला करी नकल, अजब आयत आई सकल ।।५।।
वास्ते रद करने को सेहर, खुली गांठें छूटे पैगंमर ।
इन से पनाह पकड़ी मैं, सो तिन की फजर करी हैं जिने ।।६।।

१. उपाधि । २. पृष्ठ, पना । ३. अवतरित । ४. वर्ष । ५. जादू ।

फलक चीज केहेते हैं हक, हुआ चाहिए दोऊ देखो विवेक ।
महंमद ले उठे उमत खास, सो तो पोहोंचे साहेब विलास ।।७।।
पीछे रह्या जो पत्थर घास, सो इन दुनियां की पैदास ।।८।।

।।प्रकरण।।१७।।चौपाई।।४३३।।

सिपारा आम आधा पूरन, फजर मक्कीए[१] सूरत रोसन ।
खास उमत आगे करों बयान, ले रोसनी मारो सैतान ।।१।।
सौगंद खाई बीच होनें फजर, द्वा दोस्तों बखत नजर ।
फजर बंदगी होसी आराम, जीव दिल पावे इसलाम ।।२।।
पेहेला रोज कौल हुरमत[२], सो हादी देखावे रोज कयामत ।
जिस बरस बीच होए फजर, पेहेले जिल्हज थें खुली नजर ।।३।।
ए पेहेले दिन की कही दसमी रात, दसमी सदी बीच आए साख्यात ।
इन दसमी से अग्यारमी भई प्रभात, मिले दोस्तों सों करी विख्यात ।।४।।
दूसरे सरूप मिल करी कस्त, हाजी[३] मस्कीनों[४] को देखाई वस्त ।
कह्या अरफे का अगला दिन, वास्ते अग्यारहीं ईद रोसन ।।५।।
पढ़ना द्वा[५] वजीफा जित, सब चाह्या हाजियों का हुआ इत ।
पाक होवे सबों का दम, तब जाहेर हुई ईद खसम ।।६।।
पेहेला रोज कयामत बयान, सो हजार बरस की इसारत जान ।
दोऊ सरूप कहे दो अंगुली, दसमी से दूजी अग्यारहीं मिली ।।७।।
दोऊ मिल अग्यारहीं भई, सब सालें मिलाइयां बीच कही ।
कलीम अल्ला[६] रोसनी दसमी मिनें, अग्यारमी में ऊग्या दिनें ।।८।।
रात में रोसनी सब जुदी भई, इब्राहीम साल्हे मिल फजर कही ।
भी फजर कही रोसनी बादल, बरस्या नूर रूहअल्ला सों मिल ।।९।।
बरस्या बादल नूर रोसन, गिरे आंझू सरमिंदे सबन ।
सब रोवें होवें पसेमान, एही हाल होसी सारी जहान ।।१०।।

।।प्रकरण।।१८।।चौपाई।।४४३।।

१. मक्का में अवतरित अध्याय । २. इज्जत । ३. तीर्थ यात्री मोमिन । ४. गरीब । ५. प्रार्थना ।
६. अल्लाह से बातें करने वाला ।

साखी- तीन दिन कहे जो बुजरक, सो तीनों सूरतों के दिन ।
रसूल से कयामत लगे, ए जो किए रोसन ।।१।।

याद करो खुदाए के तांईं, तकबीर[१] कहों दिन गिने हैं जांहीं ।
ए तीन दिन जो हैं बुजरक, पीछे ईद जुहा के हक ।।२।।

नजीक इमाम आजम के कही, पीछे निमाज सुबह की भई ।
अरफा से असर ईद दिन, दोए साहेब भए कौल इन ।।३।।

सुबह सेती अरफे का दिन, आखिर तांईं असर इन ।
बांधी उमेद बड़ी आगूं आवन, भई तीनों दिन निमाज पूरन ।।४।।

इन मसलें साफई इमाम, माफक दूजे साहेब का नाम ।
सिताबी[२] फिरे जो कोई, तो रोज मिलावा लेवे सोई ।।५।।

अग्यारहीं बारहीं जिल्हज करे, सो गुनाह कछू ना धरे ।
बाजे हैं जाहिल[३] आरब, बातें करें सिताबी तब ।।६।।

गिरोह एक बखत आखिर, आबिद को खुदाए कह्या यों कर ।
सिताबी होवे रूखसद[४], तुझ पर गुनाह नाहीं कद ।।७।।

और कोई ढील करे जो तांहीं, तीन रात रहे मजल माहीं ।
तिनको कछुए नहीं आजार[५], तेहेकीक यों ही है निरधार ।।८।।

इन में जो कोई परहेज करे, पीछे अदा के हज गुनाह से डरे ।
जो कोई खतरों से फिरया होए, परहेज करे आराम वास्ते सोए ।।९।।

बाकी जेती रही उमर, तिन में रखे खुदाए का डर ।
कयामत को होवें जाहेर, पोहोंचेंगे बदले यों कर ॥१०॥

।।प्रकरण।।१९।।चौपाई।।४५३।।

१. विवरण । २. जल्दी । ३. अज्ञानी । ४. विदा । ५. मुसीबत ।

तारीख नामा

जिनको कयामत की है सक, क्यों कर उठसी एह खलक ।
बात नहीं ए बरकरार[१], काफर न देखें ए विस्तार ।।१।।
न देखें अपना हवाल[२], कई पैदा किए आदमी डाल ।
खुदा खाक पाक से पैदा किया, तिन बूंद का ए विस्तार कर दिया ।।२।।
एही तमाम जो पैदाइस कही, तिनका खुलासा कर देऊं सही ।
जिन सेती होवे मकसूद, इन नाबूद सेती ल्याया बूद ।।३।।
तिन में बाजे कहे बेसुध, तिनको कबूं न आवे बुध ।
इन में खुदाए किए दोए, कयामत काम दूजे से होए ।।४।।
साहेब चाहे सो करे, निपट मांहें नजर में धरे ।
ए खुदाए पेहेले किया करार, जमाना होसी सिरदार ।।५।।
खावंद होए के करसी काम, तिनका अव्वल से धरिया नाम ।
बाहेर ल्याया तुमारे तांईं, छिपा लड़का था पेट माहीं ।।६।।
निहायत[३] था नातवान[४], ना वर पाएगी ना काम पेहेचान ।
सब तरबियत[५] तुमको किया, पोहोंचे कुदरत तमाम हाथ दिया ।।७।।
तूं था बीच कौम जाहिल, तित खुदाए ने दई अकल ।
बरस बारहीं के लिए तीस, दस लिए अग्यारहीं के किए चालीस ।।८।।
तुममें से कोई होएगा ऐसा, जो पोहोंच के करेगा वफा[६] ।
बीच ज्वानियां आगूं ज्वान, बाहेर फेर हुए निदान ।।९।।

।।प्रकरण।।२०।।चौपाई।।४६२।।

लिख्या आम सिपारे सूरत, आठईं मांहें मजकूर कयामत ।
सौंह करी साहेब आसमान, ए इसारत बारहीं सदी में निदान ।।१।।
दो हादी दसमी सदी से आए, उमत तिन में लई मिलाए ।
दस ऊपर दोए बुरज[७] जो कही, इन में हादी उमत मजकूर भई ।।२।।

१. उचित । २ हाल बड़ा । ३. बहुत ही । ४. कमजोर । ५. खुलासा - शिक्षा देना । ६. प्रतिज्ञा पालन । ७. नक्षत्र ।

दस और दोए जुदे कहे, ए इसारत जिनकी सोई लहे ।
ए बुरज कहे दस और दोए, ए गिनती मजल चांद की सोए ।।३।।
या दरिया या आसमान सब, ए कौल साहेब का न भूलें कब ।
ए सौगंद खाए के करी सरत, एही रोज जो कही कयामत ।।४।।
फेर फेर कह्या सौं खाई, अल्ला की साहेदी देवाई ।
खुदाए देखता है सबन, और जानता है सबन के मन ।।५।।
ग्वाही भी साहेब की कही, सौंह भी खुदाए की खाई सही ।
एक कौल बीच बंदा कह्या, पैगंमर भी एही भया ।।६।।

।।प्रकरण।।२१।।चौपाई।।४६८।।

अमेतसालून[1]

महंमदें जाहेर करी दावत, डर फुरमाया रोज कयामत ।
पढ़्या खलक ऊपर कुरान, ए तीनों मानें नहीं फुरमान ।।१।।
काफर पूछें मोमिनों से ले, ना पूछे रसूल को दिल दे ।
खुदाए ताला ने कह्या यों कर, किस चीज से पूछें काफर ।।२।।
कुरान चीज ऐसी बुजरक, फेर तिन में ल्यावें सक ।
रसूल को नाम धरें काफर, किवता झूठा जादूगर ।।३।।
ए बुजरक बुनियाद नबुवत, बीच कौल दरगाह बड़ी सिफत ।
कोई कहे पैगंमर है, कोई सायर[2] दिवाना कहे ।।४।।
कोई कोई कयामत को मानें, कोई कोई सामे मारें तानें ।
एक गिरो मिने नबुवत, कहे छुड़ावेंगे वे कयामत ।।५।।
केतेक साहेब सों बैठे फिर, केतेक कयामत से मुनकर ।
बाजों को दुनियां हैयात, बाजे सक ल्यावें इन बात ।।६।।
खुदाए की सौंह खाए के कही, के कयामत नजीक आई सही ।
पेहेली नीयत अकीदे[3] अपनी, झूठा कौल ना करे धनी ।।७।।

१. कुरान का ३०वा पाराः । २. कवि । ३. विश्वास ।

जिमी को कह्या बिछान, तिन पर ल्यावसी तीनों जहान ।
पहाड़ मेखां[1] कही उस्तुवार, पैदा किया दुनियां नर नार ।।८।।

तो नसल तुमारी बाकी रहे, स्याह सुपेत छोटे बड़े कर कहे ।
कोई खूब कोई किए बुरे, नींद रात ताजगियां करे ।।९।।

रात निकोइयों[2] को भाने, कूवत हैवानी की आने ।
बंदगी इनसे होवे दूर, सब ढांपे अंधेर मजकूर ॥१०॥

साहेब फतुआत[3] का यों कहे, साहेब रातों के तले रात रहे ।
इनकी नजरों न छिपे दुस्मन, जो कोई हैं साहेब के तन ॥११॥

रातों चलने वाले कहे सेखल इसलाम, करें परदा दुनियां सों चलें आराम ।
दिन के तांईं कह्या बाजार, इत बे इन्साफी चलन हार ॥१२॥

ए जो चले रातों के यार, मैं इन बंदे पाकों की जाऊं बलिहार ।
कह्या जो साहेब का दिन, ओ बखत तलब करें मोमिन ॥१३॥

इनहीं में ढूंढ़ें हासिल[4], इस दिन उमत की फसल ।
इनके तले सातों आसमान, ए सारों के ऊपर जान ॥१४॥

और खलक जो इनके तले, तिन खलकों को होए जुलजुले[5] ।
पैदा किया आफताब[6] रोसन, ए दिन हुआ वास्ते मोमिन ॥१५॥

इनों के साथ उतर्‌या बादल, सो नूर बादलियां रोसन जल ।
तिन की पैदास कही दाना घास, ए कही इसारत तीनों पैदास ॥१६॥

गेहूं जौ और कह्या घास, काफर फरिस्ते रूहें उमत खास ।
फरिस्ते जो गेहूं इसलाम, और घास कह्या सब काफर तमाम ॥१७॥

मोती दरियाव से काढ़्या महंमद, इन बिध इत लिख्या सब्द ।
घास कह्या सब चारा हैवान, गिरो उतरी दोऊ दरियाव से जान ॥१८॥

याही को बाग दरखत कहे, नजीक मिलाप लपेटे गए ।
इनों के बीच चले हुकम, रोज कयामत को जाहेर खसम ॥१९॥

१. खूंटे । २. भलाई करने वाला । ३. न्याय । ४. प्राप्ति । ५. देवी प्रकोप, भूकंप । ६. सूर्य ।

बरकरार[1] किया हुकम बखत, ए इसारत जाहेर कही कयामत ।
ए फसल परहेजगार मोमिन, काफरों के तंबीह के दिन ॥२०॥

इस रोज फूंके करनाए[2], असराफील सूर कुरान के गाए ।
एक सूरें आखिर हुई सबन, दूजे सूरें उठे सब तन ॥२१॥

सब उठे कबर थें अपनी, कायम किए कयामत के धनी ।
इमाम सालबी यों कहे बनी, रसूल पूछे उमत अपनी ॥२२॥

कहे कयामत में सबे उठाए, दस बिध फैल पूछे जाए ।
बांदर सूरत होसी सुकन चीन, जिनों हिरदे में नहीं आकीन ॥२३॥

सुवर सूरत हरामखोर कहे, जो कबूं हलाल[3] के ढिग ना गए ।
गधे सूरत कहे हरामकार, जिन के बुरे फैल रोजगार ॥२४॥

सूद खाने वाले हुए अंधे, उसी खैंच से दोजख फंदे ।
न किया सिजदा न सुनी पुकार, सो हुए बेहेरे पड़े दोजख मार ॥२५॥

गूंगे कहे जालिम हुकम, वे सबके तले न ले सकें दम ।
पढ़े जुबां काटे पीव लोहू बहे, झूठे फैल मुख सीधे कहे ॥२६॥

मलें दोजखी हाथ पांऊं दोए, ताए देखे भिस्ती अचरज होए ।
उड़न वाले कहे मोमिन, मुतकी भी पड़ोसी तिन ॥२७॥

ताए हर भांत रंज पोहोंचाया जिन, सो लटके बीच सूली अगिन ।
चुगलखोर[4] काटे हाथ पांऊं, और सखती दिलों को लगे घाउ ॥२८॥

ए दस भांत की कही दोजक, जो बे फुरमान हुए हक ।
जिनहू फैल जैसे किए, तिनको बदले तैसे दिए ॥२९॥

फुरमाया केतेक फेर उठाए, तकब्बरों[5] दोजख हमेसगी पाए ।
और जो कहे मोतिन के घर, सो खासी उमत साहेब के दर ॥३०॥

उनको जो लगे रहे, सो मुतकी बूंदों मिले कहे ।
जिनों इनों की दोस्ती लई, साहेबें पातसाही तिनको दई ॥३१॥

१. निश्चित । २. नरसिंघा । ३. उचित । ४. निंदक । ५. अभिमानी ।

और भी सुनो दूजी जंजीर, दिल दे देखो खीर और नीर ।
ए जो दुनियां का कह्या आसमान, दो टुकड़े दिल कह्या जहान ॥३२॥

ए रोज है निपट सखत, यों जुलजुला होसी कयामत बखत ।
बीच हवा के पहाड़ उड़ाए, ए जो दुनियां में बुजरक केहेलाए ॥३३॥

बुजरकों धोखा क्योंए न जाए, तो बखत ऐसा दिया देखाए ।
फितुए[१] इनों के जावें तब, ऐसा कठिन बखत देखें जब ॥३४॥

ठंढे वजूद होवें वर पाए, तब हकीकत देखें आए ।
सब दुनियां हुई गुन्हेगार, यों देख्या बखत दोजखकार ॥३५॥

अब जो सुनो खास उमत, खड़े रहो दोजख एक बखत ।
जिन भागो गोसे रहो खड़े, देखो दोजखियों खजाने बढ़े ॥३६॥

भिस्त रजवान[२] मोमिन निगेहवान[३], दोजख खजाना पोहोंचे कुफरान ।
तहां तांईं बखत पोहोंचे सबन, पैदरपे[४] जले अगिन ॥३७॥

गुजरे हैं हद सें काफर, दूर दराज जानी थी आखिर ।
दुख लंबे हुए तिन कारन, यों मता पाया दोजखियों हाल इन ॥३८॥

करे मोअलिम[५] नकल अपनी जुबांए, सांची जिकर जो कही खुदाए ।
जब मगज माएने लीजे खोल, तब पाइए इसारत बातून बोल ॥३९॥

साखी-दुनियां की उमर कही, अव्वल सिपारे मांहें ।
सात हजार साल चालीस, नीके देखियो ताहें ॥४०॥

तैंतालीस जुफ्त[६] जो कहे, हर जुफ्त सत्तर बहार[७] भए ।
हर बहार सात सौ बरस लए, हर बरस तीन सौ साठ दिन दए ॥४१॥

याके एकैस लाख सात हजार दिन, आदम पीछे मजल इन ।
ए रसूल के आए की मजल, ए गिनती कर तुम देखो दिल ॥४२॥

पांच हजार ताए बरस भए, आठ सौ सैंतालीस ऊपर कहे ।
त्रेसठ बरस उमर के लिए, छे हजार नब्बे कम किए ॥४३॥

१. फिसाद । २. रखवाला । ३. संरक्षक । ४. निरंतर । ५. शिक्षक । ६. जोड़ा । ७. हिस्सा ।

इतथें रसूलें करी सफर, इनके आगे की करों जिकर ।
अग्यारहीं के जब बाकी दस, तब दुनियां उमर सात हजार बरस ॥४४॥

इत थें अमल भयो इमाम, चालीस बरसों फजर तमाम ।
जोड़ा पर जोड़ा गुजरे, दुनियां उमर इत लों करे ॥४५॥

तिन में जो दस बरसों फजर, सब दुनियां भई एक नजर ।
तीस बरस जब अग्यारहीं पर, तब दुनियां सब भई आखिर ॥४६॥

सत्तर बरस पुलसरात के कहे, सो उठने कयामत बीच में रहे ।
पुलसरात दुख कहिए क्यों कर, काफर जलें जुलजुले[1] आखिर ॥४७॥

दस और दोए बुरज जो कहे, सो बारहीं कयामत के पूरे भए ।
ए तीसरी बड़ी फरिस्तों की फजर, पीछे उठ खड़ी दुनियां नूर नजर ॥४८॥

॥प्रकरण॥२२॥चौपाई॥५१६॥

दिन कयामत के पूरे कहे, सो खास उमतवालों ने लहे ।
क्यों लहे जाको लिखी दोजक, जावे नहीं तिनों की सक ॥१॥

पुरसिस[2] का दिन साहेब देखावे, कयामत कौल दूजा कोई न पावे ।
पांच सूरत लिखी आम सिपारे, ए समझें पाक दिल उजियारे ॥२॥

ए पांचों नेक अमल जो करें, सो भिस्ती फुरमान से ना टरें ।
और झूठा काम बदफैली करे, सो दोजख की आग में परे ॥३॥

हमेसां दोजखी बदकार[3], रोज कयामत के हुए खुआर ।
ए दिन किने न किया मुकरर, ताए पेहेचानो जिन दई खबर ॥४॥

कोई न जाने राह न जाने दिन, इन समें हादिएँ किए चेतन ।
उस दिन बदला होवे अति जोर, हाथों सीधे साहेब करे मरोर ॥५॥

तित पोहोंच के सुध दई तुमें किन, बुजरकी दई इत इन ।
निहायत इस रोज की कोई न पावे, ए पातसाह पुरसिस का देखावे ॥६॥

१. भूकंप और ज्वालाएं । २. हिसाब, पूछताछ । ३. दुराचारी ।

किनको नफा न देवे कोए, तब कोई न किसी के दाखिल होए ।
कूवत[1] तिन समें कहुंए जाए, तो कोई नफा किसी को न सके पोहोंचाए ।।७।।

हुकम हादी का साहेब फुरमान, करे सिफायत खुदा मोमिनों पेहेचान ।
मोमिन आकीनदारों को चाहें, हकमें भी उनहीं को मिलाएँ ।।८।।

जब जाहेर हुआ रोजा और हज्ज, तब काजिएँ खोल्या मुसाफ मगज ।
ए बात साहेबें छत्रसालसों कही, घर इमाम बिलंदी छत्ता को दई ।।९।।

।।प्रकरण।।२३।।चौपाई।।५२५।।

नौमी आगे अरफा ईद कही, ले दसमी आगे सब लीला भई ।
मजलें सब अग्यारहीं के मध, सो कहे कुरान विवेक कई विध ।।१।।

ए अग्यारहीं बीच बड़ो विस्तार, प्रगटे बिलंद सब सिरदार ।
सब न्यामतें सिफतें दई सितार, उतरियां आयतें जो उस्तवार ।।२।।

छिपा था बुजरक बखत, जाहेर हुआ रोज देखाई कयामत ।
अग्यारहीं सुख ले चले सिरदार, पीछे बारहीं में जले बदकार ।।३।।

जिन पाई राह रोज कयामत, सो उठे फजर के नूर बखत ।
फजर पीछे जब ऊग्या दिन, तब तो तोबा तोबा हुई तन तन ।।४।।

तब तो दरवाजा मूंद के गया, पीछे तो नफा काहू को न भया ।
सब जले जल्या अजाजील, जाए उठाया असराफील ।।५।।

एक सूरें उड़ाएके दिए, दूसरे तेरहीं में कायम किए ।
यों कयामत हुई जाहेर दिन, महंमदें करी उमत रोसन ।।६।।

।।प्रकरण।।२४।।चौपाई।।५३१।।

प्रकरण तथा चौपाईयों का संपूर्ण संकलन

प्रकरण ५२७, चौपाई १८७५८

।। बड़ा कयामतनामा सम्पूर्ण।।

१. हिम्मत ।

कुलजम सरूप ग्रन्थ में,
जो खोजे चित लाए ।
हद बेहद पर धाम लों,
आतम दृष्टि लखाए ॥१॥

कुलजम सरूप ग्रन्थ को,
जो करे नित विचार ।
आतम जाग्रत होवहीं,
खुले धाम के द्वार ॥२॥

कुलजम सरूप ग्रन्थ को,
नित सेवे जो कोए ।
पूरण प्रेम जो उपजे,
सत्वर दरसन होए ॥३॥

कुलजम सरूप ग्रन्थ को,
पढ़े पढ़ावे कोए ।
धाम रास बृज जागनी,
मिले इंछित सुख सोए ॥४॥

कुलजम सरूप ग्रन्थ को,
जो करहीं नित पाठ ।
अहनिस युगल सरूप सों,
खेले सातों घाट ॥५॥

कुलजम सरूप ग्रन्थ को,
सेवे आठों जाम ।
उन सब सुन्दर साथ को,
करूं दण्डवत प्रणाम ॥६॥